



भारत का राजपत्र The Gazette of India

सी.जी.-डी.एल.-अ.-12032024-252865
CG-DL-E-12032024-252865

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग III—खण्ड 4
PART III—Section 4

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 156]

नई दिल्ली, बृहस्पतिवार, मार्च 7, 2024/फाल्गुन 17, 1945

No. 156]

NEW DELHI, THURSDAY, MARCH 7, 2024/PHALGUNA 17, 1945

आयुर्वेद शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान

अधिसूचना

नई दिल्ली, 27 फरवरी, 2024

फा. सं. एल/12015/25/2021-एएस(II).—आयुर्वेद शिक्षण और अनुसंधान संस्थान अधिनियम, 2020 (2020 का 16) की धारा 28 की उप-धारा (1) के अनुच्छेद (ट) और धारा 13 के अनुच्छेद (च) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, आयुर्वेद शिक्षण और अनुसंधान संस्थान, केंद्र सरकार के पूर्वानुमोदन से, निम्नलिखित नियम बनाता है, अर्थात्: -

1. संक्षिप्त शीर्षक और प्रारंभ- (1) इन नियमों का संक्षिप्त नाम आयुर्वेद शिक्षण और अनुसंधान संस्थान, स्नातकोत्तर-आयुर्वेद नियम, 2024 है।

(2) ये राजपत्र में उनके प्रकाशन की तारीख से प्रवृत्त होंगे।

2. परिभाषाएँ- (1) इन नियमों में, जब तक कि संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो-

(क) "अधिनियम" का अर्थ है आयुर्वेद शिक्षण और अनुसंधान संस्थान अधिनियम, 2020 (2020 का 16);

(ख) "आवेदक" का अर्थ उस व्यक्ति से है जो निर्धारित आवेदन पत्र में संस्थान के आयुर्वेद के स्नातकोत्तर डिग्री कार्यक्रमों में प्रवेश के लिए आवेदन करता है;

(ग) "सह-मार्गदर्शक" या "सह-पर्यवेक्षक" का अर्थ जहां कहीं भी आवश्यक हो, एक अतिरिक्त मार्गदर्शक या पर्यवेक्षक से है, जिसे स्कॉलर के अनुसंधान कार्य की निगरानी या मार्गदर्शन करने के लिए विभागीय अनुसंधान समिति द्वारा अनुमोदित किया गया है और सह-मार्गदर्शक या सह-पर्यवेक्षक संस्थान के पूर्णकालिक फैकल्टी हो सकते हैं अथवा नहीं भी।

(घ) "परीक्षा नियंत्रक" का अर्थ संस्थान के सक्षम प्राधिकारी द्वारा नियुक्त परीक्षा नियंत्रक से है;

(ड) "परीक्षा अनुशासनात्मक कार्रवाई समिति" का अर्थ अनुशासनात्मक कार्रवाई के उद्देश्य से डीन (शैक्षणिक), डीन (स्नातकोत्तर), दो नामांकित सदस्यों और परीक्षा नियंत्रक से मिलकर बनी एक समिति है।

(च) "गाइड" या "पर्यवेक्षक" का अर्थ संस्थान की पूर्णकालिक फैकल्टी से है जिसे अकादमिक परिषद द्वारा शोध स्कॉलर के शोध कार्य का मार्गदर्शन या पर्यवेक्षण करने के लिए अनुमोदित किया गया है;

(छ) "संस्थागत पशु आचार समिति" का अर्थ है पांच वर्ष की अवधि के लिए जानवरों पर प्रयोगों के नियंत्रण और पर्यवेक्षण के लिए समिति, जिसमें जैव वैज्ञानिक, पशु गृह सुविधा के प्रभारी वैज्ञानिक, विभिन्न जैविक अनुशासन के दो वैज्ञानिक, एक पशुचिकित्सक मुख्य नामांकित व्यक्ति, लिंक नामांकित व्यक्ति, बाहरी संस्थान से वैज्ञानिक और सामाजिक जागरूक नामांकित व्यक्ति, शामिल हैं;

(ज) "संस्थागत आचार समिति" का अर्थ भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद के संविधान के अनुसार तीन वर्ष की अवधि के लिए गठित समिति से है, जिसमें अध्यक्ष (संस्थान के बाहर से), सदस्य सचिव (आयुर्वेदिक चिकित्सक), दार्शनिक या नीतिशास्त्री, चिकित्सा विशेषज्ञ, बुनियादी चिकित्सा वैज्ञानिक (फार्माकोलॉजिस्ट), संस्थान के बाहर से चिकित्सक, चिकित्सा विशेषज्ञ-आयुर्वेदिक विज्ञान, समुदाय के सामान्य व्यक्ति-महिला और पुरुष, समाज वैज्ञानिक और कानूनी सलाहकार शामिल हैं;

(झ) "प्रधान अन्वेषक" का अर्थ संस्थान द्वारा अनुसंधान परियोजना के लिए नामित उस व्यक्ति से है जो परियोजना के निष्पादन के दौरान परियोजना से संबंधित मामलों और बौद्धिक संपदा के सृजन के संबंध में संस्थागत अनुसंधान समिति के साथ संवाद करता है।

(ञ.) "स्कॉलर" का अर्थ उस व्यक्ति से है जिसे स्नातकोत्तर डिग्री कार्यक्रम के लिए प्रवेश दिया गया है और जो इन नियमों का अनुपालन करता है;

(ट) "शिक्षक" का अर्थ है नियमित आधार पर संस्थान में लेक्चरर या सहायक प्रोफेसर, रीडर या सह-प्राध्यापक, प्रोफेसर और बुनियादी विज्ञान विभाग में फार्माकोलॉजिस्ट, फार्मास्युटिकल केमिस्ट, फार्माकोग्नोसिसिस्ट, बायोकेमिस्ट, माइक्रोबायोलॉजिस्ट, पैथोलॉजिस्ट और रेडियोलॉजिस्ट तथा जैव-संबद्ध क्षेत्र में अन्य समकक्ष पद के रूप में नियुक्त किया गया व्यक्ति, और

(ठ) "डिग्री कार्यक्रम की अवधि" का अर्थ उस न्यूनतम अवधि से है जिसमें छात्र संस्थान और विभाग में भाग लेगा, जिसमें संस्थान द्वारा अंतिम (तीसरे) वर्ष की परीक्षा में सफलतापूर्वक उत्तीर्ण घोषित किए जाने तक निवासी या गैर-निवासी छात्र के रूप में बिताया गया समय भी शामिल है।

(2) यहां प्रयुक्त और परिभाषित नहीं किए गए लेकिन अधिनियम में परिभाषित शब्दों और अभिव्यक्तियों का वही अर्थ होगा जो उन्हें अधिनियम में दिया गया है।

3. प्रवेश समिति- (1) एक प्रवेश समिति होगी जिसमें निम्नलिखित सदस्य होंगे, अर्थात्:-

संस्थान की प्रवेश समिति		
1.	निदेशक	अध्यक्ष;
2.	उपनिदेशक (स्नातकोत्तर)	सदस्य;
3.	डीन(शैक्षणिक)	सदस्य;
4.	आयुर्वेद के तीन विभागों के प्रमुखों को अध्यक्ष द्वारा अधिमानतः रोटेशन के आधार पर नामित किया जाएगा	सदस्य; और
5.	सहायक रजिस्ट्रार (प्रशासनिक)	सदस्य-सचिव

(2) समिति इन नियमों के अनुसार आयुर्वेद शिक्षण और अनुसंधान संस्थान में प्रवेश प्रक्रिया की निगरानी करेगी।

(3) प्रत्येक वर्ष संस्थान के निदेशक द्वारा प्रवेश समिति का गठन किया जाएगा।

(4) बैठक का कोरम पूरा करने के लिए न्यूनतम पचास प्रतिशत सदस्यों की आवश्यकता होती है।

4. संस्थागत अनुसंधान समिति- (1) एक संस्थागत अनुसंधान समिति होगी जिसमें निम्नलिखित सदस्य होंगे, अर्थात्:-

संस्थान की संस्थागत अनुसंधान समिति		
1.	निदेशक	अध्यक्ष;
2.	उपनिदेशक (स्नातकोत्तर)	सदस्य;
3.	उपनिदेशक (फार्मेसी)	सदस्य;
4.	डीन(शैक्षणिक)	सदस्य-सचिव;
5.	सदस्य-सचिव, संस्थागत आचार समिति	सदस्य;
6.	सदस्य-सचिव, संस्थागत पशु आचार समिति	सदस्य;
7.	जैवसांख्यिकीविद्	सदस्य;
8.	बायोकेमिस्ट्री या पैथोलॉजी या माइक्रोबायोलॉजी प्रमुख को अध्यक्ष द्वारा अधिमानतः रोटेशन के आधार पर नामित किया जाएगा जिसे अध्यक्ष द्वारा अंतिम रूप दिया जा सकता है।	सदस्य;
9.	फार्माकोलॉजी या फार्मास्युटिकल केमिस्ट्री या फार्माकोग्रॉसी प्रमुख को अध्यक्ष द्वारा अधिमानतः रोटेशन के आधार पर नामित किया जाएगा जिसे अध्यक्ष द्वारा अंतिम रूप दिया जा सकता है।	सदस्य;
10.	शिक्षण विभागों के तीन प्रमुखों को अध्यक्ष द्वारा अधिमानतः रोटेशन के आधार पर नामित किया जाएगा जिसे अध्यक्ष द्वारा अंतिम रूप दिया जा सकता है।	सदस्य;
11.	संस्थान के लेखा अनुभाग का प्रमुख	सदस्य;
12.	अध्यक्ष द्वारा नामित तीन आमंत्रित बाहरी विशेषज्ञ।	सदस्य; और
13.	डीन (अनुसंधान)	सदस्य-सचिव
	बैठक का कोरम न्यूनतम पचास प्रतिशत होगा।	

(2) संस्थागत अनुसंधान समिति का गठन निदेशक द्वारा तीन वर्ष की अवधि के लिए डीन (अनुसंधान) की अनुशंसा पर किया जाएगा।

(3) सिफारिशें करते समय, संस्थागत अनुसंधान समिति यह सुनिश्चित करेगी कि सिफारिशें इन विनियमों के अनुरूप की गई हैं और उसके पास निम्नलिखित शक्तियां और कार्य होंगे, अर्थात्: -

(क) संस्थान की अनुसंधान गतिविधियों की समीक्षा और निगरानी करना;

(ख) अनुसंधान प्रस्तावों और अन्य अनुसंधान परियोजना से संबंधित मामलों की समीक्षा और अनुमोदन करना;

(ग) विभागीय अनुसंधान समिति की सिफारिशों की जांच करना और उचित निर्णय लेना;

(घ) प्रस्तावित प्रायोजित अनुसंधान कार्य या परियोजना की प्रकृति, उद्देश्य, गुणवत्ता और व्यवहार्यता निर्धारित करने के लिए प्रायोजक एजेंसियों के आवेदनों की जांच करना और यदि कोई हो तो उसे मंजूरी देना और आवश्यक सिफारिशें करना;

(ङ) प्रस्तावित प्रायोजित अनुसंधान कार्य या परियोजना के लिए प्रधान अन्वेषक की नियुक्ति करना;

(च) सह-प्रधान अन्वेषक, यदि कोई हो, को प्राथमिकता देकर विशेष परिस्थितियों में अनुसंधान परियोजनाओं के प्रधान अन्वेषक से बदलना; और

(छ) राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय या संस्थान अथवा किसी भी प्रतिष्ठित संगठन या एजेंसियों के साथ समझौता ज्ञापन की समीक्षा और अनुशंसा करना।

(4) संस्थागत अनुसंधान समिति वर्ष में त्रैमासिक या कम से कम दो बार बैठक करेगी:

बशर्ते कि, संस्थागत अनुसंधान समिति के अध्यक्ष अनुसंधान संबंधी गतिविधियों पर चर्चा करने के लिए किसी भी समय बैठक बुलाएंगे।

(5) संस्थागत अनुसंधान समिति की प्रत्येक बैठक के बाद सदस्य-सचिव बैठक का कार्यवृत्त तैयार करेगा और सदस्यों के बीच वितरण के बाद अध्यक्ष के अनुमोदन से सदस्य-सचिव द्वारा हस्ताक्षरित किया जाएगा और कार्यवृत्त की प्रति सदस्यों, निदेशक और परीक्षा नियंत्रक और अन्य संबंधितों को भेजी जाएगी।

(6) बैठक का कोरम पूरा करने के लिए न्यूनतम पचास प्रतिशत सदस्यों की आवश्यकता होती है।

5. विभागीय अनुसंधान समिति- (1) निदेशक द्वारा संस्थान के प्रत्येक शिक्षण विभाग के लिए संबंधित विभागाध्यक्ष की अनुशंसा पर तीन वर्ष की अवधि के लिए एक विभागीय अनुसंधान समिति का गठन किया जाएगा और प्रत्येक विभागीय अनुसंधान समिति में न्यूनतम पांच सदस्य होंगे।

(2) कोरम पूरा करने के लिए न्यूनतम पचास प्रतिशत की आवश्यकता होती है और पीएचडी डिग्री वाले नियमित शिक्षक विभागीय अनुसंधान समिति के सदस्य होंगे।

(3) विभागीय अनुसंधान समिति में निम्नलिखित सदस्य शामिल होंगे, अर्थात्: -

संस्थान की विभागीय अनुसंधान समिति		
1.	विभागाध्यक्ष	अध्यक्ष;
2.	विभाग के सभी प्रोफेसर	सदस्य;
3.	विभाग के टीचिंग स्टाफ से रोटेशन पर एक सह-प्राध्यापक	सदस्य;
4.	विभाग के टीचिंग स्टाफ से रोटेशन पर एक सहायक प्राध्यापक	सदस्य सचिव;
5.	विभागीय अनुसंधान समिति से अध्यक्ष द्वारा नामांकित एक शिक्षक जो अन्य विभाग से होगा	सदस्य; और
6.	अध्यक्ष द्वारा नामांकित अनुसंधान प्रयोगशाला का एक प्रमुख	सदस्य

(4) डीन (अनुसंधान) को किसी भी विभागीय अनुसंधान समिति की बैठक में भाग लेने का अधिकार दिया गया है और उसे विशेष बैठक का सदस्य माना जाएगा।

(5) अध्यक्ष प्रोफेसर के श्रेणी का होगा और यदि विभाग का प्रमुख प्रोफेसर के श्रेणी का नहीं है, तो निदेशक उसी विभाग के एक सह-प्राध्यापक या उपयुक्त व्यक्ति को अध्यक्ष के रूप में नियुक्त कर सकता है।

(6) विभागीय अनुसंधान समिति के अध्यक्ष के पास संस्थान के स्टॉफ में से ऐसे सदस्य को अस्थायी सदस्य के रूप में चुनने का अधिकार होगा जो उनके विचार-विमर्श में सहायक हो सकता है।

(7) विभागीय अनुसंधान समिति आवश्यकता पड़ने पर या कम से कम त्रैमासिक बैठक करेगी।

(8) विभागीय अनुसंधान समिति के पास निम्नलिखित शक्तियां और कार्य होंगे, अर्थात्: -

(क) अनुसंधान के उस क्षेत्र को मंजूरी देना जिसमें स्कॉलरों को अनुसंधान करने की सिफारिश की जाएगी;

(ख) यदि आवश्यक हो, तो औचित्य के साथ मार्गदर्शक या पर्यवेक्षक को बदलने की सिफारिश करना;

(ग) शोध कार्यों की प्रगति रिपोर्ट का मूल्यांकन करना और शोध कार्य से संबंधित अन्य सभी मुद्दों पर चर्चा करना।

(9) विभागीय अनुसंधान समिति की प्रत्येक बैठक के बाद विभागीय अनुसंधान समिति का सदस्य-सचिव बैठक का कार्यवृत्त तैयार करेगा और सदस्यों के बीच वितरण करने के बाद, समिति के अध्यक्ष के अनुमोदन से सदस्य-सचिव द्वारा हस्ताक्षर किए जाएंगे।

(10) कार्यवृत्त की एक प्रति डीन (शैक्षणिक) और डीन (अनुसंधान) को भेजी जाएगी।

(11) विभागीय अनुसंधान समिति में किसी भी विवाद की स्थिति में, मामला संस्थागत अनुसंधान समिति को भेजा जाएगा, जिसका निर्णय अंतिम और बाध्यकारी होगा।

6. स्नातकोत्तर आयुर्वेद डिग्री कार्यक्रम में उपलब्ध विशेषज्ञताएं - (1) संस्थान विभिन्न आयुर्वेद विशेषज्ञताओं में स्नातकोत्तर आयुर्वेद डिग्री प्रदान करेगा।

(2) विशेषज्ञता का नाम और विभाग जिसमें स्नातकोत्तर डिग्री संचालित होनी है, निम्नलिखित तालिका में उल्लिखित है: -

तालिका

क्र.सं.	विशेषज्ञता का नाम	वह विभाग जिसमें स्नातकोत्तर उपाधि संचालित की जानी है।
1.	आयुर्वेद संहिता एवं सिद्धांत	आयुर्वेद के मौलिक सिद्धांत;
2.	द्रव्य गुण विज्ञान	द्रव्यगुण;
3.	रस शास्त्र एवं भैषज्य कल्पना	रस शास्त्र एवं भैषज्य कल्पना;
4.	कायचिकित्सा	कायचिकित्सा;
5.	पंचकर्म	पंचकर्म;
6.	रोग निदान एवं विकृति विज्ञान	रोग निदान एवं विकृति विज्ञान;
7.	स्वस्थवृत्त	स्वस्थवृत्त तथा योग;
8.	क्रिया शारीर	क्रिया शारीर;
9.	कौमारभृत्य-बालरोग	कौमारभृत्य;
10.	प्रसूति एवं स्त्री रोग	प्रसूति एवं स्त्री रोग;
11.	शल्य	शल्य तंत्र;
12.	शालाक्य	शालाक्य तंत्र;
13.	रचना शारीर	रचना शारीर; और
14.	अगद तंत्र	अगद तंत्र

(3) अत्यधिक समतुल्य शब्दावली के साथ विशेषज्ञता या डिग्री का नामकरण नीचे दी गई तालिका में उल्लेख किए गए अनुसार होगा, अर्थात:-

तालिका

क्र.सं.	विशेषज्ञता या डिग्री का नामकरण	निकटतम समतुल्य शब्दावली
1.	आयुर्वेद वाचस्पति-आयुर्वेद संहिता एवं सिद्धांत	एम.डी. (आयुर्वेद)- मौलिक सिद्धांत;
2.	आयुर्वेद वाचस्पति- द्रव्यगुण विज्ञान	एम.डी. (आयुर्वेद)- मटेरिया मेडिका और फार्माकोलॉजी;
3.	आयुर्वेद वाचस्पति- रस शास्त्र एवं भैषज्य कल्पना	एम.डी. (आयुर्वेद) - फार्मास्यूटिकल्स;
4.	आयुर्वेद वाचस्पति- कायाचिकित्सा	एम.डी. (आयुर्वेद)- मेडिसिन;
5.	आयुर्वेद वाचस्पति-पंचकर्म	एम.डी. (आयुर्वेद)- पंचकर्म;
6.	आयुर्वेद वाचस्पति- रोग निदान एवं विकृति विज्ञान	एम.डी. (आयुर्वेद) - नैदानिक प्रक्रिया और पैथोलॉजी;
7.	आयुर्वेद वाचस्पति-स्वास्थ्यवृत्त	एम.डी. (आयुर्वेद)- सामाजिक और निवारक चिकित्सा;
8.	आयुर्वेद वाचस्पति-क्रिया शारीर	एम.डी. (आयुर्वेद) - फिजियोलॉजी;
9.	आयुर्वेद वाचस्पति-कौमारभृत्य-बालरोग	एम.डी. (आयुर्वेद)- बाल रोग;

10.	आयुर्वेद धन्वन्तरि- प्रसूति तंत्र एवं स्त्री रोग	एम.एस. (आयुर्वेद)- प्रसूति एवं स्त्री रोग;
11.	आयुर्वेद धन्वन्तरि- शल्य	एम.एस. (आयुर्वेद)- सर्जरी;
12.	आयुर्वेद धन्वन्तरि- शालाक्य	एम.एस. (आयुर्वेद) - आंख, कान, नाक, गला, सिर, गर्दन, मुख और दंत चिकित्सा के रोग;
13.	आयुर्वेद वाचस्पति- रचना शारीर	एम.डी. (आयुर्वेद) – शरीर रचना; और
14.	आयुर्वेद वाचस्पति-अगद तंत्र	एम.डी. (आयुर्वेद)- टॉक्सिकोलॉजी और फॉरेंसिक मेडिसिन।

7. स्नातकोत्तर डिग्री कार्यक्रम में प्रवेश के लिए पात्रता-

(1) आवेदक को प्रवेश के शैक्षणिक वर्ष के लिए केंद्र सरकार द्वारा नामित प्राधिकरण द्वारा आयोजित अखिल भारतीय आयुष स्नातकोत्तर प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण करनी होगी और स्नातकोत्तर डिग्री कार्यक्रम में प्रवेश के लिए पिछले प्रवेश परीक्षा की मेरिट पर विचार नहीं किया जाएगा।

(2) आवेदक के पास केंद्रीय भारतीय चिकित्सा परिषद या भारतीय चिकित्सा राष्ट्रीय पद्धति आयोग द्वारा मान्यता प्राप्त किसी भी वैधानिक विश्वविद्यालय या वैधानिक निकाय से बैचलर ऑफ आयुर्वेद मेडिसिन एंड सर्जरी की डिग्री या वैधानिक निकायों द्वारा प्रदत्त कोई समकक्ष डिग्री होनी चाहिए और एक वर्ष की पूर्व-पंजीकरण इंटरनशिप की आवश्यक अवधि पूरी करनी चाहिए और भारतीय चिकित्सा पद्धति के केंद्रीय रजिस्टर या राज्य रजिस्टर में नामांकित होना चाहिए।

8. प्रवेश की तिथि - स्नातकोत्तर डिग्री कार्यक्रम में प्रवेश एक वर्ष में एक बार होगा।

9. प्रवेश का तरीका - (1) संस्थान में स्नातकोत्तर डिग्री कार्यक्रम के लिए प्रवेश हेतु इच्छुक आवेदकों को निर्धारित योग्यता मानदंडों के अनुसार केंद्र सरकार द्वारा नामित प्राधिकरण द्वारा आयोजित अखिल भारतीय आयुष स्नातकोत्तर प्रवेश परीक्षा के माध्यम से अर्हता प्राप्त करनी होगी।

(2) अभ्यर्थी अखिल भारतीय आयुष स्नातकोत्तर प्रवेश परीक्षा आयोजित करने के लिए नामित परीक्षा प्राधिकरण द्वारा निर्धारित तिथि के भीतर, समय-समय पर ऑनलाइन मोड के माध्यम से घोषित आवेदन शुल्क के साथ एक निर्धारित आवेदन पत्र में आवेदन करेगा।

(3) अखिल भारतीय आयुष स्नातकोत्तर प्रवेश परीक्षा का विवरण संस्थान की वेबसाइट और अखिल भारतीय आयुष स्नातकोत्तर प्रवेश परीक्षा आयोजित करने के लिए नामित प्राधिकरण की वेबसाइट पर उपलब्ध होगा।

(4) ऑनलाइन प्रवेश परीक्षा के लिए परीक्षा केंद्र प्राधिकरण द्वारा निर्धारित किए जाएंगे और संस्थान की वेबसाइट और अखिल भारतीय आयुष स्नातकोत्तर प्रवेश परीक्षा आयोजित करने के लिए नामित प्राधिकारी की वेबसाइट पर उपलब्ध होंगे।

(5) परिणाम और अखिल भारतीय मेरिट सूची संस्थान की वेबसाइट तथा अखिल भारतीय आयुष स्नातकोत्तर प्रवेश परीक्षा आयोजित करने के लिए नामित प्राधिकरण की वेबसाइट पर प्रकाशित की जाएगी।

(6) काउंसिलिंग केंद्र सरकार द्वारा नामित प्राधिकारी द्वारा निर्धारित किए गए अनुसार की जाएगी।

(7) विदेशी नागरिकों या नामांकित शिक्षकों अथवा चिकित्सा अधिकारियों को छोड़कर, प्रायोजित या नामांकित उम्मीदवारों को विनियम 7 में निर्दिष्ट पात्रता के साथ प्रवेश परीक्षा में अर्हता प्राप्त करना भी आवश्यक होगा।

(8) प्रवेश हेतु इच्छुक विदेशी नागरिक उम्मीदवारों को अपना आवेदन आयुर्वेद शिक्षण और अनुसंधान संस्थान या भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (विदेशी नागरिकों हेतु आयुष छात्रवृत्ति का लाभ उठाने के लिए), भारत सरकार, नई दिल्ली के माध्यम से प्रस्तुत करने होंगे और उन्हें अखिल भारतीय आयुष स्नातकोत्तर प्रवेश परीक्षा से छूट दी गई है।

(9) सभी चयनित अभ्यर्थी मेडिकल फिटनेस के अधीन होंगे और जब तक उन्हें चिकित्सकीय रूप से फिट घोषित नहीं किया जाता तब तक उन्हें डिग्री प्रोग्राम में शामिल होने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

10. आरक्षण- (1) विभिन्न श्रेणियों अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग, आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग और बेंचमार्क विकलांगता वाले व्यक्तियों के लिए आरक्षण, प्रवेश के समय भारत सरकार के कार्मिक और प्रशिक्षण विभाग के दिशानिर्देशों के अनुरूप होगा।

(2) केंद्र सरकार द्वारा नामांकित उम्मीदवारों और राज्य सरकार या संघ राज्य क्षेत्र प्रशासन द्वारा प्रायोजित उम्मीदवारों के लिए तीन सीटें आरक्षित की जाएंगी, जिनके पास संबंधित विशेषज्ञता या विषय में स्नातकोत्तर डिग्री कार्यक्रम वाले सरकारी संस्थान या कॉलेज नहीं हैं, उन पर समय-समय पर आयुष मंत्रालय द्वारा प्रदान किए गए दिशानिर्देश के अनुसार नामांकन के लिए विचार किया जाएगा।

(3) विदेशी नागरिक उम्मीदवारों के लिए तीन नॉन-स्टाइपेंडरी सीटें आरक्षित की जाएंगी और इन उम्मीदवारों को भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद से प्राप्त आवेदन के माध्यम से आयुष मंत्रालय द्वारा नामित किया जाएगा।

(4) यदि आरक्षित कोटे की सीटों में से कोई रिक्ति निकलती है, तो उसे केंद्र सरकार के लागू मानदंडों का सख्ती से पालन करते हुए भरा जाएगा।

11. स्टाइपेंड- (1) जिन स्कॉलरों को स्टाइपेंड सीटों पर प्रवेश दिया जाता है, उन्हें संस्थान द्वारा समय-समय पर अवधि जो तीन वर्ष से अधिक की नहीं होगी, के लिए निर्धारित मासिक स्टाइपेंड का भुगतान किया जाएगा, बशर्ते कि उनकी उपस्थिति, मुख्य प्रशिक्षण, अनुसंधान प्रगति, आचरण और अस्पताल का काम संतोषजनक हो तथा प्रारंभिक परीक्षा में असफल होने की दशा में, परीक्षा उत्तीर्ण करने और अगले वर्ष पदोन्नति तक के लिए, स्टाइपेंड रोक दी जाएगी।

(2) केंद्र सरकार या राज्य सरकार के रोजगार के तहत किसी भी प्रायोजित अभ्यर्थी को, अध्ययन अवधि के दौरान, संस्थान द्वारा किसी पारिश्रमिक का भुगतान नहीं किया जाएगा और इस संबंध में किसी भी पारिश्रमिक का भुगतान संबंधित सरकार की जिम्मेदारी होगी।

(3) सत्र के बीच में पढ़ाई छोड़ने वाले स्कॉलरों को स्नातकोत्तर डिग्री कार्यक्रम में शामिल होने से लेकर दो लाख रुपये की बांड राशि के साथ स्कॉलर को भुगतान की गई स्टाइपेंड की पूरी राशि वापस करनी होगी।

(4) संस्थान के निदेशक नियम 11 की उपधारा (3) में उल्लिखित ऐसे मामलों पर निर्णय लेने के लिए सक्षम प्राधिकारी होंगे।

(5) अध्ययन अवधि के दौरान किसी स्कॉलर की मृत्यु की स्थिति में, स्टाइपेंड की कोई वसूली नहीं की जाएगी।

12. बांड- (1) प्रत्येक चयनित अभ्यर्थी को अनुलग्नक के अनुसार निर्धारित प्रपत्र में स्नातकोत्तर डिग्री कार्यक्रम में शामिल होने से पहले संस्थान के साथ बांड निष्पादित करना होगा।

(2) यदि छात्र बीच में ही कार्यक्रम छोड़ देता है, तो छात्र को संस्थान से रीलिव होने के लिए मुआवजे के रूप में संस्थान को अग्रिम भुगतान किए गए स्टाइपेंड के साथ दो लाख रुपये का अग्रिम भुगतान करना होगा।

13. डिग्री कार्यक्रम की अवधि और उपस्थिति- (1) चयनित उम्मीदवारों को प्रवेश के बाद तीन वर्ष तक अध्ययन की अवधि से गुजरना होगा, जिसमें से एक वर्ष प्रारंभिक पाठ्यक्रम के लिए और अगले दो वर्ष विशेषज्ञ पाठ्यक्रम के लिए समर्पित होंगे।

(2) यदि छात्र किसी भी कारण से संस्थान के प्राधिकारी की उचित अनुमति के साथ डिग्री कार्यक्रम बीच में छोड़ देता है, तो उसे प्रवेश की तारीख से छह वर्ष की अधिकतम अवधि के भीतर डिग्री कार्यक्रम पूरा करने की अनुमति दी जाएगी।

(3) स्कॉलरों को परीक्षा में शामिल होने हेतु पात्र बनने के लिए कुल व्याख्यान, प्रयोग और क्लिनिक में कम से कम पचहत्तर प्रतिशत भाग लेने की आवश्यकता होगी।

(4) स्कॉलरों को अध्ययन की अवधि के दौरान अस्पताल और उन्हें आवंटित अन्य कर्तव्यों में भाग लेने की आवश्यकता होगी।

(5) सभी स्कॉलरों को क्रमशः प्रारंभिक और अंतिम पाठ्यक्रम के दौरान अपने संबंधित विभागों में कनिष्ठ या वरिष्ठ निवासी कर्तव्यों का पालन करना होगा।

(6) पहले वर्ष में स्कॉलरों को कनिष्ठ निवासियों के रूप में काम करना होगा और एक दिन में कम से कम तीन से पांच घंटे इनडोर अस्पताल, नामित प्रयोगशालाओं, फार्मसी ज्यूटियों में भाग लेना होगा जहां उन्हें सभी संबंधित रिकॉर्ड पूरे करने होंगे।

(7) दूसरे और तीसरे वर्ष के स्कॉलरों को वरिष्ठ निवासियों के रूप में काम करना होगा और रोगियों से संबंधित सभी नैदानिक रिकॉर्ड को पूरा करना होगा और संबंधित शिक्षक को संबंधित कार्य और बाह्य रोगी विभाग कर्तव्यों के संचालन में सहायता करनी होगी और साथ ही अस्पताल की इमरजेंसी और रात्रिकालीन ड्यूटी भी करनी होगी।

(8) सभी स्कॉलरों को रविवार और छुट्टियों के दिन भी अस्पताल की ड्यूटी करनी होगी तथा उन्हें छुट्टियों के दौरान स्टेशन से बाहर जाने के लिए विभाग प्रमुख की सिफारिश पर डीन (शैक्षणिक) की पूर्वानुमति और अनुमोदन लेना होगा।

(9) डीन (शैक्षणिक) या निदेशक की पूर्वानुमति के बिना स्कॉलर की तीस दिनों से अधिक की अनुपस्थिति पर, प्रवेश बिना किसी सूचना के स्वचालित रूप से समाप्त हो जाएगा।

(10) स्कॉलरों को विशेष व्याख्यान, प्रदर्शन, कार्यशाला, सेमिनार, प्रशिक्षण, अध्ययन दौरे और ऐसी अन्य गतिविधियों में भाग लेना होगा जो संस्थान द्वारा समय-समय पर आयोजित की जा सकती हैं।

(11) स्कॉलरों को अध्ययन अवधि के दौरान एक साथ किसी अन्य पूर्णकालिक डिग्री कार्यक्रम में शामिल होने की अनुमति नहीं दी जाएगी, लेकिन उचित माध्यम से डीन (शैक्षणिक) से अनुमति के बाद ही उन्हें सौंपे गए कर्तव्यों और अध्ययन में बाधा डाले बिना डिप्लोमा या प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम में शामिल होने की अनुमति दी जा सकती है।

(12) यदि स्कॉलर को डिग्री कार्यक्रम के कार्यकाल के दौरान किसी सरकारी निकाय में स्थायी नियुक्ति के लिए चुना जाता है, तो स्कॉलर सेवाओं को ज्वाइन कर सकता है और नियुक्ता से उचित अनुमति प्राप्त करने के बाद स्कॉलर संस्थान में ज्वाइन होने की तारीख से छह वर्ष की अवधि के भीतर डिग्री कार्यक्रम पूरा कर सकता है।

(13) यदि स्कॉलर सेवा में ज्वाइन होने के एक वर्ष बाद संस्थान में ज्वाइन होने की तारीख से छह वर्ष की अवधि के भीतर अध्ययन पूरा करने में विफल रहता है, तो प्रवेश रद्द माना जाएगा और उसे दो लाख रुपये की बांड राशि के साथ, स्टाइपेंड की पूरी राशि का भुगतान नियम 11 का उप-नियम (3) के अनुसार करना होगा।

(14) अध्ययन में दोबारा शामिल होने के मामले में, स्कॉलर को प्रत्येक वर्ष पचहत्तर प्रतिशत उपस्थिति और अंतिम परीक्षा में शामिल होने से पहले शोध प्रबंध पूरा करने के मानदंडों को पूरा करना होगा।

14. प्रशिक्षण की पद्धति- (1) अपनी-संबंधित विशेषज्ञता में तुलनात्मक एवं आलोचनात्मक अध्ययन के साथ-साथ शास्त्रीय ज्ञान में गहन प्रशिक्षण दिया जाएगा तथा सेवाकालीन प्रशिक्षण एवं प्रयोग पर बल दिया जाएगा।

(2) स्कॉलरों को अपनी संबंधित विशेषज्ञता में किए गए शोध कार्य की विधियों और तकनीकों के बारे में जानना आवश्यक है।

(3) प्रशिक्षण के लिए ऐसे पैटर्न की आवश्यकता होती है ताकि उसकी देखभाल के लिए सौंपे गए रोगियों के प्रबंधन और उपचार में तथा आपात स्थिति से निपटने के लिए स्कॉलर को श्रेणीबद्ध जिम्मेदारी दी जा सके।

(4) स्कॉलरों को अपनी विशेषज्ञता में स्नातक स्कॉलरों या प्रशिक्षुओं के शिक्षण और प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेना होगा।

(5) प्रथम वर्ष की अवधि में, उन्हें आयुर्वेद के सभी विषयों पर मौलिक रूप से लागू पहलुओं में पर्याप्त ज्ञान प्रदान करने पर जोर दिया जाएगा और चिकित्सा के आधारभूत विज्ञान में इसके सभी लागू और तुलनात्मक पहलुओं से संबंधित विशेषज्ञता से संबंधित पर्याप्त प्रशिक्षण दिया जाएगा।

(6) नैदानिक प्रशिक्षण का उद्देश्य स्कॉलर के ज्ञान का विस्तार करना है ताकि विशेषज्ञ के रूप में स्वतंत्र कार्य कर सके।

(7) डिग्री कार्यक्रम के सभी चरणों के दौरान स्कॉलरों को एक योजनाबद्ध कार्यक्रम पर विस्तृत और गहन प्रशिक्षण दिया जाएगा और यदि आवश्यक हो तो ऐसा कार्यक्रम डीन (शैक्षणिक) या उप निदेशक (स्नातकोत्तर) के निरीक्षण और जांच के लिए उपलब्ध होगा।

(8) डिग्री कार्यक्रम के दौरान शिक्षण प्रौद्योगिकी और अनुसंधान विधियों पर पर्याप्त प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा।

(9) प्रत्येक विभाग को शिक्षण और प्रशिक्षण के एक भाग के रूप में एक अध्ययन दौरे की योजना बनानी होगी और अध्ययन दौरे पूरी तरह से विषय या विशेषज्ञता से संबंधित स्थानों पर होंगे, जिसका उद्देश्य क्षेत्र की अतिरिक्त जानकारी और ज्ञान को जोड़ना होगा और अध्ययन दौरे में भारत में निम्नलिखित स्थानों का दौरा शामिल होगा, अर्थात्:-

(क) आयुर्वेदिक उद्योग;

(ख) जड़ी-बूटियों या औषधीय पौधों के अवलोकन के लिए कोई वन या स्थान;

- (ग) विभिन्न विशिष्टताओं के प्रसिद्ध आयुर्वेदिक अस्पताल, पंचकर्म केंद्र या पारंपरिक उपचार का स्थान;
 (घ) अनुसंधान केंद्र और प्रयोगशालाएं;
 (ङ) आयुर्वेद से संबंधित पांडुलिपि पुस्तकालय, पुरातत्व स्थल; और
 (च) प्रमुख राष्ट्रीय शैक्षणिक संस्थान।

(10) निर्देशों का माध्यम हिंदी, अंग्रेजी या संस्कृत में होगा।

15. परीक्षाएँ- (1) स्नातकोत्तर डिग्री कार्यक्रम में दो मुख्य परीक्षाएँ होंगी, जैसे प्रारंभिक परीक्षा और अंतिम परीक्षा।

(2) अध्ययन के प्रथम वर्ष के पाठ्यक्रम के लिए निर्धारित विषयों में प्रारंभिक परीक्षा पहले शैक्षणिक वर्ष के अंत में आयोजित की जाएगी।

(3) विनियम 17 के उप-विनियम (2) में उल्लिखित विशेषज्ञता के विषय में अंतिम परीक्षा तीसरे शैक्षणिक वर्ष के अंत में आयोजित की जाएगी।

(4) दूसरे वर्ष में कोई परीक्षा नहीं होगी लेकिन स्कॉलरों को संस्थान द्वारा प्रस्तावित न्यूनतम एक अल्पकालिक प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम और विश्व स्वास्थ्य संगठन, नेशनल प्रोग्राम ऑन टेक्नोलॉजी एन्हांसड लर्निंग, स्टडी वेब्स ऑफ एक्टिव-लर्निंग फॉर यंग एस्पिरेंट माइंड्स, ओपन कोर्स वेयर-मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, विभिन्न भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों से ऑनलाइन पाठ्यक्रम जैसे किसी अन्य सरकारी मान्यता प्राप्त संगठन द्वारा प्रस्तावित न्यूनतम एक ऑनलाइन पाठ्यक्रम पूरा करना होगा।

(5) पाठ्यक्रम को अधिमानतः सूचना विज्ञान, डेटा प्रबंधन और व्याख्या, वैज्ञानिक लेखन संचार कौशल, व्यक्तित्व विकास, अस्पताल प्रबंधन, औषधि अनुसंधान और विकास जैसे विषयों से चुना जा सकता है।

(6) संस्कृत भी आयुर्वेद के अध्ययन और अनुसंधान के लिए उपयोगी विषय हो सकता है।

(7) स्कॉलर को उसके अनुसंधान परियोजना में संतोषजनक प्रगति, संबंधित विभाग में नियमितता और समयनिष्ठा के आधार पर तथा पहले वर्ष के सभी विषयों को उत्तीर्ण करने के बाद, अंतिम वर्ष में पदोन्नत किया जाएगा।

(8) प्रारंभिक और अंतिम वर्ष की परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए आवश्यक न्यूनतम अंक सैद्धांतिक और व्यावहारिक (जिसमें व्यावहारिक, नैदानिक और मौखिक परीक्षा जहां भी लागू हो, शामिल हैं) में अलग-अलग पचास प्रतिशत होंगे, जैसा कि इन नियमों की अंक वितरण तालिका में निर्दिष्ट है और कोई ग्रेस अंक स्वीकार्य नहीं होगा।

(9) पैंसठ प्रतिशत और उससे अधिक अंक प्राप्त करने वाला छात्र विषय में प्रथम श्रेणी और पचहत्तर प्रतिशत और उससे अधिक अंको को विषय में विशिष्टता प्रदान किए जाएंगे और ये अवार्ड पूरक परीक्षाओं के लिए लागू नहीं होंगे।

16. प्रारंभिक परीक्षा के लिए विषय- (1) इसमें दो सैद्धांतिक पेपर होंगे, प्रत्येक तीन घंटे की अवधि का और सौ अंकों का होगा, उसके बाद व्यावहारिक या क्लिनिकल अथवा मौखिक परीक्षा होगी जिसमें नीचे दी गई तालिका में उल्लिखित विषय होंगे, अर्थात् :-

तालिका

क्र.सं.	विषयों का नाम	सैद्धांतिक अंक	मौखिक और प्रायोगिक अंक
1.	अनुसंधान पद्धति और चिकित्सा सांख्यिकी	100(60+ 40)	100
2.	विशिष्ट विषय	100	100

(2) संस्थान प्रत्येक सेमेस्टर अथवा वर्ष में समय-समय पर शिक्षण पैटर्न और विषय या पाठ्यक्रम निर्धारित करेगा।

(3) यदि कोई स्कॉलर केवल एक विषय में असफल होता है, तो उसे दूसरे वर्ष के सत्र को जारी रखने की अनुमति दी जाएगी और किसी भी स्कॉलर को दूसरे वर्ष से अंतिम (तीसरे) वर्ष में तब तक पदोन्नत नहीं किया जाएगा, जब तक कि उसने सभी विषयों में प्रथम वर्ष की परीक्षा उत्तीर्ण नहीं कर ली हो।

(4) बाद की पूरक प्रारंभिक परीक्षा प्रत्येक छह महीने में आयोजित की जाएगी और प्रारंभिक परीक्षा को अधिकतम चार वर्ष की अवधि के भीतर उत्तीर्ण करने के लिए अधिकतम चार परीक्षण (मुख्य परीक्षा सहित) दिए जाएंगे और छात्र को

अधिकतम सीमा के भीतर उत्तीर्ण होने में उसकी असमर्थता की स्थिति में आगे डिग्री कार्यक्रम जारी रखने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

17. अंतिम परीक्षा योजना:- (1) सभी स्कॉलर जो अंतिम वर्ष की परीक्षा में शामिल होना चाहते हैं, उन्हें संस्थान द्वारा निर्दिष्ट तिथि और उसके अनुमोदन से पहले डीन (शैक्षणिक) के माध्यम से शोध प्रबंध प्रस्तुत करना होगा।

(2) प्रत्येक सौ अंक और तीन घंटे की अवधि के चार सैद्धांतिक पेपर होंगे, इसके बाद सौ अंकों की व्यावहारिक या नैदानिक या मौखिक परीक्षा होगी और अंतिम वर्ष के लिए विशेषज्ञता के अनुसार विषय नीचे तालिका में दिए गए अनुसार होंगे, अर्थात्:-

तालिका

पेपर नं.	विषयों का नाम	सैद्धांतिक अंक (चार पेपर)	प्रायोगिक या नैदानिक अथवा मौखिक अंक	कुल अंक
1	आयुर्वेद संहिता एवं सिद्धांत	400	100	500
2	द्रव्यगुण विज्ञान	400	100	500
3	रसशास्त्र एवं भैषज्य कल्पना	400	100	500
4	काय चिकित्सा	400	100	500
5	पंचकर्म	400	100	500
6	रोग निदान एवं विकृति विज्ञान	400	100	500
7	स्वस्थवृत्त	400	100	500
8	कौमारभृत्य-बालरोग	400	100	500
9	क्रिया शारीर	400	100	500
10	प्रसूति तंत्र एवं स्त्री रोग	400	100	500
11	शल्य	400	100	500
12	शालाक्य	400	100	500
13	रचना शारीर	400	100	500
14	अगद तंत्र	400	100	500

(3) संस्थान समय-समय पर विशिष्ट विषयों के प्रत्येक पेपर का शिक्षण पैटर्न और पाठ्यक्रम निर्धारित करेगा।

(4) सैद्धांतिक, व्यावहारिक, नैदानिक या मौखिक परीक्षाओं के लिए अंकों का विभाजन संबंधित विभाग द्वारा निर्दिष्ट किया जाएगा और अकादमिक परिषद द्वारा अनुमोदित किया जाएगा और समय-समय पर संशोधित किया जाएगा।

(5) अंतिम (तृतीय) वर्ष के अनुत्तीर्ण छात्रों के लिए अनुवर्ती पूरक परीक्षा प्रत्येक छह महीने में आयोजित की जाएगी।

(6) स्नातकोत्तर डिग्री कार्यक्रम की कुल अवधि छह वर्ष से अधिक नहीं होगी।

18. परीक्षा का संचालन- (1) सैद्धांतिक और प्रायोगिक परीक्षाओं के समय, डीन (शैक्षणिक) पीठासीन अधिकारी होंगे।

(2) प्रारंभिक परीक्षा में, प्रत्येक सैद्धांतिक प्रश्नपत्र कुल सौ अंकों का होगा, जिसमें दो भाग होंगे, अर्थात् भाग ए और भाग बी।

(3) प्रारंभिक परीक्षा के लिए, एक उत्तर पुस्तिका के लिए दो अलग-अलग परीक्षकों द्वारा दो मूल्यांकन होंगे ताकि एकल मूल्यांकन की असंतुलित प्रकृति और परिणामी अप्रिय स्थिति को कम किया जा सके।

- (4) दोहरे मूल्यांकन के बाद, दोनों अंकों में कुल अंकों के बीस प्रतिशत तक भिन्नता होने की स्थिति में, दोनों अंकों के औसत को अंतिम स्कोर माना जाएगा।
- (5) भिन्नात्मक अंकों के मामले में, यदि अंश 0.5 या उससे ऊपर है, तो इसे अगले उच्चतम अंक तक पूर्णांकित किया जाएगा और यदि स्कोर 0.5 से नीचे है तो इसे निचले अंक मान तक पूर्णांकित किया जाएगा।
- (6) दोहरे मूल्यांकन के अंत में, यदि दो स्वतंत्र अंकों के बीच अंतर कुल अंको के बीस प्रतिशत से अधिक है, तो ऐसी उत्तर पुस्तिकाओं को तीसरे पात्र परीक्षक द्वारा मूल्यांकन पर विचार किया जाएगा।
- (7) दो अलग-अलग परीक्षकों में से एक परीक्षक बाहरी होगा और संबंधित विषय के लिए प्रायोगिक या नैदानिक या मौखिक परीक्षा भी आयोजित करेगा।
- (8) अंतिम वर्ष की परीक्षा चार परीक्षकों की एक टीम द्वारा आयोजित की जाएगी, जिनमें से दो परीक्षक बाहरी होंगे और ये चार परीक्षक प्रत्येक विशेषज्ञता या विषय के लिए सौ अंकों के चार सैद्धांतिक प्रश्न पत्र तैयार करेंगे।
- (9) अंतिम वर्ष की परीक्षा के लिए, एक उत्तर पुस्तिका के लिए चार परीक्षकों द्वारा चार मूल्यांकन होंगे और सभी अंको के औसत को अंतिम स्कोर माना जाएगा।
- (10) भिन्नात्मक अंकों के मामले में, यदि भिन्न 0.5 या उससे ऊपर है, तो इसे अगले उच्चतम अंक तक पूर्णांकित किया जाएगा और यदि स्कोर 0.5 से नीचे है तो इसे निचले अंक मान तक पूर्णांकित किया जाएगा।
- (11) जिन परीक्षकों ने सैद्धांतिक पेपर तैयार किया है, वे प्रायोगिक या नैदानिक अथवा मौखिक परीक्षा भी आयोजित करेंगे।
- (12) एक मान्यता प्राप्त स्नातकोत्तर शिक्षक, जैसा कि विनियम 21 में उल्लिखित है, पांच वर्ष के स्नातकोत्तर शिक्षण अनुभव के साथ सहायक प्रोफेसर या संबंधित विषयों में इससे अधिक शिक्षण अनुभव हो, स्नातकोत्तर परीक्षा के लिए एक परीक्षक के रूप में नियुक्त होने के लिए पात्र होगा।
- (13) परीक्षा के समय किसी भी कारण से बाहरी परीक्षक की अनुपलब्धता के मामले में, डीन (शैक्षणिक) परीक्षा नियंत्रक को सूचित करते हुए परीक्षा आयोजित करने के लिए नए परीक्षक को नियुक्त करेगा और नव नियुक्त परीक्षक अधिमानतः बाहरी होगा और ऐसे परीक्षक की अनुपलब्धता के मामले में, संबंधित विषय के आंतरिक वरिष्ठ फैकल्टी को नियुक्त किया जाएगा।
- 19. शोध प्रबंध-** (1) स्नातकोत्तर आयुर्वेद डिग्री कार्यक्रम के एक भाग के रूप में, प्रत्येक स्कॉलर संबंधित विशेषज्ञता और पाठ्यक्रम से संबंधित विषय पर एक शोध प्रबंध तैयार करेगा।
- (2) शोध प्रबंध के सार संक्षेप के साथ शोध प्रबंध का शीर्षक प्रथम वर्ष में प्रवेश के नौ महीने के भीतर संस्थान में पंजीकृत किया जाएगा और प्रत्येक शोध प्रबंध का विषय प्रयोग उन्मुख हो सकता है, अप्रमाणिक दोहराव से मुक्त हो सकता है और आयुर्वेद विज्ञान के विकास में सहायक हो सकता है।
- (3) शोध प्रबंध के सार संक्षेप में शोध प्रबंध का पूरा शीर्षक, कार्य की आवश्यकता, कार्य की कार्ययोजना, विभाग के नाम के साथ कार्य के लिए आवश्यक बजट और मार्गदर्शक या पर्यवेक्षक तथा सह-मार्गदर्शक अथवा सह-पर्यवेक्षक के नाम और पदनाम का स्पष्ट रूप से उल्लेख किया जाएगा।
- (4) विभागीय स्कॉलरों के सभी शोध प्रबंध के सार संक्षेप पर विभागीय अनुसंधान समिति में चर्चा की जाएगी और विभागीय अनुसंधान समिति के अनुमोदन के बाद, उन्हें संस्थागत अनुसंधान समिति को भेजा जाएगा जो शोध प्रबंध के शीर्षक और कार्य की प्रस्तावित योजना का अनुमोदन करेगी।
- (5) अनुमोदन के बाद, शोध प्रबंध के सार संक्षेप को संस्थागत नैतिकता समिति या संस्थागत पशु आचार समिति (जो भी लागू हो) को भेजा जाएगा, जो नैतिक मुद्दों की जांच करेगी और किए जाने वाले कार्य के लिए अनुमोदन देगी।
- (6) एक बार जब शोध प्रबंध का शीर्षक स्वीकृत हो जाता है, तो विभागीय अनुसंधान समिति और संस्थागत नैतिकता समिति के अनुमोदन के बाद ही स्कॉलरों को शीर्षक या कार्य की प्रस्तावित योजना को बदलने की अनुमति दी जाएगी, जिसके संबंध में अंततः परीक्षा नियंत्रक को सूचित करना होगा।
- (7) संस्थागत आचार समिति के अनुमोदन के बाद प्रत्येक नैदानिक अनुसंधान कार्य को संभावित रूप से "भारत की नैदानिक परीक्षण रजिस्ट्री" में पंजीकृत किया जाएगा।

- (8) प्रत्येक स्कॉलर को प्रत्येक सत्र के अंत में गाइड या पर्यवेक्षक द्वारा विधिवत हस्ताक्षरित और अग्रेषित कार्य की प्रगति रिपोर्ट विभागीय अनुसंधान समिति को प्रस्तुत करनी होगी और विभागीय अनुसंधान समिति कार्य की प्रगति का आकलन और निगरानी करेगी और तदनुसार इसे अनुमोदित करेगी।
- (9) शोध प्रबंध को स्कॉलर द्वारा उसके द्वारा चुने गए अनुसंधान प्रश्न पर किए गए शोध के तरीकों और संभावनाओं को रिकॉर्ड पर रखा जाएगा और संस्थान द्वारा अनुमोदित मार्गदर्शक या पर्यवेक्षक के मार्गदर्शन में पूरा किया जाएगा।
- (10) शोध प्रबंध के लिए काम का उपयोग साहित्य की खोज, इसके महत्वपूर्ण अध्ययन और इसके व्यावहारिक अनुप्रयोग को सीखने के लिए किया जाएगा और शोध प्रबंध में स्कॉलर के स्वयं के शोध का विवरण शामिल होगा।
- (11) शोध प्रबंध में साहित्य की आलोचनात्मक समीक्षा, कार्यप्रणाली, शोध के परिणाम, अध्ययन के शोध निष्कर्षों के आधार पर चर्चा, सारांश, निष्कर्ष और संदर्भ शामिल होंगे।
- (12) शोध प्रबंध को ए4 आकार के कागज के दोनों तरफ एक इंच के मार्जिन के साथ टाइप किया जाना चाहिए और टाइपिंग 12 के फ्रॉन्ट आकार में टाइम्स न्यू रोमन के फ्रॉन्ट के साथ 1.5 लाइन रिक्ति के साथ की जानी चाहिए और शीर्षक का कवर संस्थान द्वारा निर्दिष्ट मानक प्रारूप में होगा और देवनागरी लिपियों के लिए यूनिकोड फॉन्ट का उपयोग किया जाएगा।
- (13) शोध प्रबंध या कार्य में कहीं भी किसी व्यक्ति की तस्वीर नहीं लगाई जाएगी और साथ ही कार्य किसी को समर्पित नहीं किया जाएगा और शीर्षक कवर तथा आंतरिक कवर का पैटर्न संस्थान द्वारा दिए गए निर्देशों के अनुरूप होगा।
- (14) शोध प्रबंध आम तौर पर चार्ट, आरेख, फोटोग्राफ, ग्रंथ सूची आदि सहित टाइप किए गए दो सौ पचास पृष्ठों से अधिक नहीं होना चाहिए।
- (15) शोध प्रबंध में निष्कर्ष को कवर करने वाले एक हजार पांच सौ से कम शब्दों का अंतिम सारांश शामिल होगा।
- (16) स्कॉलर को अंतिम परीक्षा से तीन महीने पहले शोध प्रबंध जमा करना होगा, न कि संस्थान द्वारा निर्धारित अंतिम तिथि के बाद।
- (17) शोध प्रबंध में स्कॉलर, मार्गदर्शक या पर्यवेक्षक और सह-मार्गदर्शक अथवा सह-पर्यवेक्षक द्वारा विधिवत हस्ताक्षरित प्रमाण पत्र शामिल होगा जिसमें कहा गया हो कि कार्य किया गया है और पर्यवेक्षक के प्रत्यक्ष पर्यवेक्षण के अधीन स्कॉलर द्वारा स्वयं डेटा एकत्र किया गया है जो प्रमाणित करता है कि वर्तमान शोध प्रबंध में उद्धृत कार्य को विधिवत स्वीकार किया गया है।
- (18) प्रत्येक शोध प्रबंध को साहित्यिक नकल की दृष्टि से जांचना होगा और प्रत्येक शोध प्रबंध के लिए लाइब्रेरियन द्वारा प्रमाण पत्र जारी किया जाएगा।
- (19) मार्गदर्शक या पर्यवेक्षक और सह-मार्गदर्शक अथवा सह-पर्यवेक्षक के प्रमाण पत्र के साथ सॉफ्ट कॉपी के साथ बाध्य शोध प्रबंध और सारांश की प्रतियों की संख्या निर्दिष्ट तिथि के भीतर जमा की जाएगी, जो संस्थान द्वारा समय-समय पर निर्धारित किए गए दिशानिर्देशों के अनुसार विभाग के प्रमुख द्वारा विधिवत अग्रेषित की जाएगी।
- (20) शोध प्रबंध का मूल्यांकन संस्थान द्वारा नियुक्त तीन निर्णायकों द्वारा किया जाएगा, जिनमें से दो निर्णायक बाहरी होंगे और एक आंतरिक (कार्य का मार्गदर्शक) होगा और कार्य को बहुमत से अनुमोदित किया जाएगा।
- (21) यदि शोध प्रबंध स्वीकृत नहीं होता है, तो इसे निर्णायकों की टिप्पणियों के साथ स्कॉलर को वापस कर दिया जाएगा और स्कॉलर आवश्यक सुधार करने के बाद शोध प्रबंध को संस्थान में पुनः प्रस्तुत कर सकता है।
- (22) स्कॉलरों को निर्णायकों द्वारा शोध प्रबंध के अनुमोदन के बाद ही स्नातकोत्तर डिग्री कार्यक्रम की अंतिम परीक्षा में शामिल होने की अनुमति दी जाएगी।
- (23) शोध प्रबंध, अनुमोदित होने पर, संस्थान की संपत्ति बन जाएगा और स्कॉलरों द्वारा किए गए शोध कार्य से संबंधित किसी भी प्रकाशन और बौद्धिक संपदा अधिकारों में इस संस्थान से संबद्धता वाले लेखक के रूप में पर्यवेक्षक या मार्गदर्शक के नाम का उल्लेख करना होगा और यदि किसी स्थिति में इसे कार्यान्वित नहीं किया जाता है, तो संस्थान कानूनी कार्रवाई शुरू कर सकता है।
- (24) संबंधित विशेषज्ञता से सह-मार्गदर्शक या सह-पर्यवेक्षक के साथ सह-चयन करके अंतर-विषयक अनुसंधान किया जा सकता है।

(25) यह वांछनीय है कि प्रत्येक स्कॉलर अपने या अपने वर्तमान शोध प्रबंध कार्य के आधार पर एक शोध पत्र कम से कम विश्वविद्यालय अनुदान आयोग-शैक्षणिक अनुसंधान और नैतिकता संघ में अनुक्रमित, समीक्षा वाली पत्रिका में प्रकाशित करें।

20. गाइड या पर्यवेक्षक- (1) संबंधित विषय के विनियम 21 में उल्लिखित एक मान्यता प्राप्त स्नातकोत्तर शिक्षक, संबंधित विशेषज्ञता या विषय में प्राध्यापक या सह-प्राध्यापक और संबंधित विशेषज्ञता या विषय में तीन वर्ष के स्नातकोत्तर शिक्षण अनुभव वाले सहायक प्राध्यापक, गाइड या पर्यवेक्षक के लिए पात्र होंगे।

(2) गाइड के लिए स्कॉलरों का आवंटन संस्थान द्वारा विभागीय अनुसंधान समिति और डीन (शैक्षणिक) के परामर्श से तैयार किए गए रोस्टर के आधार पर किया जाएगा।

(3) संस्थान द्वारा समय-समय पर जारी दिशा-निर्देशों के अनुसार प्रत्येक गाइड के तहत स्कॉलरों और सीटों का वितरण, प्रत्येक वर्ष प्रोफेसर के तहत अधिकतम चार स्कॉलर, सह-प्राध्यापक के तहत तीन स्कॉलर और सहायक प्रोफेसर के तहत दो स्कॉलर पंजीकृत हो सकते हैं।

(4) जब मार्गदर्शकों की संख्या आनुपातिक रूप से कम हो, तो संकाय सदस्य की योग्यता और पदनाम को ध्यान में रखते हुए, अतिरिक्त स्कॉलरों का भी पंजीकरण किया जा सकता है।

(5) शोध प्रबंध पूरा होने से पहले गाइड की सेवानिवृत्ति के मामले में, संबंधित विषय या विभाग का अगला पात्र सह-मार्गदर्शक या सह-पर्यवेक्षक अथवा शिक्षक, निदेशक से उचित अनुमति प्राप्त करने के बाद, गाइड की जिम्मेदारी लेगा।

(6) यदि किसी डॉक्टर ऑफ मेडिसिन या डॉक्टर ऑफ सर्जरी (आयुर्वेद) स्कॉलर का कोई मार्गदर्शक सेवानिवृत्त हो जाता है या किसी कारण से पद से इस्तीफा दे देता है और उसके मार्गदर्शन में शोध कार्य पूरा हो चुका है तथा उसे विभाग प्रमुख द्वारा प्रमाणित किया गया है एवं उसके बाद निदेशक को उसी गाइड के तहत शोध प्रबंध प्रस्तुत करने की अनुमति देने के लिए अधिकृत किया गया है।

(7) किसी शिक्षक को अपनी सेवानिवृत्ति से तीन वर्ष पहले स्नातकोत्तर स्कॉलरों को पंजीकृत करने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

(8) किसी भी विशेषज्ञता में उप-विनियम (1) के अनुसार योग्य गाइड या पर्यवेक्षक की अनुपलब्धता के मामले में, संस्थान के निदेशक को अंतरिम उपाय के रूप में गाइड या पर्यवेक्षक के लिए पात्रता मानदंड में छूट देने का अधिकार है।

21. स्नातकोत्तर शिक्षक के रूप में मान्यता - निम्नलिखित योग्यता और शिक्षण अनुभव रखने वाले संस्थान के शिक्षकों को स्नातकोत्तर शिक्षक के रूप में मान्यता दी जाएगी, अर्थात्: -

(क) संबंधित विशेषज्ञता या विषय में स्नातकोत्तर डिग्री;

(ख) स्नातकोत्तर डिग्री के बाद न्यूनतम तीन वर्ष का स्नातकोत्तर शिक्षण अनुभव या स्नातकोत्तर डिग्री के बाद न्यूनतम पांच वर्ष का स्नातक शिक्षण अनुभव; या

(ग) आयुर्वेद या किसी अन्य बुनियादी विज्ञान में स्नातकोत्तर डिग्री के साथ न्यूनतम दस वर्ष का अनुसंधान या औद्योगिक अनुभव रखने वाले विशेषज्ञ को संस्थान के विजिटिंग पोस्ट ग्रेजुएट शिक्षक के रूप में मान्यता दी जा सकती है।

22. वेकेशन और छुट्टियाँ- (1) शैक्षणिक वर्ष के अंत में विद्यार्थियों को पंद्रह दिनों की छुट्टियाँ होंगी और वेकेशन के साथ किसी भी प्रकार की छुट्टी नहीं जुड़ी होगी।

बशर्ते कि निदेशक के पास असाधारण परिस्थितियों में अतिरिक्त छुट्टी स्वीकृत करने की शक्ति होगी।

(2) स्कॉलरों को प्रत्येक वर्ष दस दिनों तक आकस्मिक छुट्टी की अनुमति दी जाएगी और ऐसी छुट्टी को छुट्टियों या रविवार के साथ जोड़ा जा सकता है तथा स्कॉलर ऐसी छुट्टियों सहित एक समय में अधिकतम दस दिनों तक छुट्टी का लाभ उठा सकते हैं।

(3) छुट्टियों के बीच में, अवकाश को छुट्टी माना जाएगा।

(4) आकस्मिक अवकाश को वेकेशन और चिकित्सा अवकाश के साथ नहीं जोड़ा जा सकता है, और ऐसे अवकाश को अगले शैक्षणिक वर्ष में आगे नहीं बढ़ाया जा सकता है।

(5) स्कॉलरों को एक पंजीकृत चिकित्सा व्यवसायी का चिकित्सा प्रमाण पत्र प्रस्तुत करने पर एक वर्ष में पंद्रह दिनों की चिकित्सा अवकाश की अनुमति दी जाएगी और ऐसी छुट्टी को अगले शैक्षणिक वर्ष तक नहीं बढ़ाया जा सकता है।

(6) जहां भी पात्र हों, ज्वाइनिंग के बाद मातृत्व लाभ अधिनियम, 1961 (1961 का 53) के अनुसार स्कॉलरों को मातृत्व या बाल देखभाल अवकाश दिया जाएगा, ऐसे स्कॉलरों को नियम 13 के उप-विनियम (1) में निर्दिष्ट अध्ययन अवधि पूरी करनी होगी।

(7) उप-नियम (6) में उल्लिखित छुट्टी अध्ययन की अवधि के दौरान एक बार महत्वपूर्ण दस्तावेज़ प्रस्तुत करने पर दी जाएगी और इस छुट्टी के साथ किसी भी प्रकार की छुट्टी नहीं जोड़ी जाएगी।

(8) निदेशक के पास असाधारण परिस्थितियों में तीस दिन तक की छुट्टी स्वीकृत करने की शक्ति है और असाधारण परिस्थितियों में स्वीकृत ऐसी छुट्टियों के लिए कोई स्टाइपेंड नहीं दिया जाएगा।

(9) ऐसी छुट्टी जो असाधारण परिस्थितियों में स्वीकृत हो, के लिए स्टाइपेंड का कोई भुगतान नहीं किया जाएगा।

(10) जिन स्कॉलरों को खेल, सेमिनार, अध्ययन दौरे में भाग लेने के लिए प्राधिकारी द्वारा प्रतिनियुक्त या अनुमति दी गई है, उन्हें छुट्टी या विशेष छुट्टी दी जाएगी और ऐसी छुट्टियां वर्ष में पंद्रह दिनों से अधिक नहीं होंगी; हालांकि, निदेशक द्वारा छुट्टी को विशेष मामले में अधिकतम पंद्रह दिनों तक बढ़ाया जा सकता है।

(11) डीन (शैक्षणिक) की पूर्व मंजूरी के बिना या ऊपर उल्लिखित सीमा से अधिक स्टाइपेंडरी या नॉन-स्टाइपेंडरी स्कॉलरों द्वारा ली गई किसी भी अनुचित छुट्टी या अनुपस्थिति को जानबूझकर अनुपस्थिति माना जाएगा और ऐसी अवधि के लिए कोई स्टाइपेंड नहीं दिया जाएगा, तथा अनुशासनात्मक कार्रवाई प्रस्तावित की जा सकती है जिसमें छात्रवृत्ति की समाप्ति और संस्थान द्वारा भुगतान किए गए स्टाइपेंड की वसूली शामिल हो सकती है।

(12) विशेष परिस्थितियों में, स्कॉलर को पंजीकृत चिकित्सा व्यवसायी द्वारा जारी वैध चिकित्सा प्रमाण पत्र के साथ चिकित्सा आधार के तहत बिना स्टाइपेंड के अधिकतम साठ दिनों तक चिकित्सा अवकाश का लाभ उठाने की अनुमति दी जाएगी।

(13) नॉन-स्टाइपेंडरी सीटों पर प्रवेश पाने वाले स्कॉलर विनियम 22 के उप-विनियमों (1) से (12) द्वारा शासित होंगे।

(14) प्राधिकारी के पास बिना किसी स्पष्टीकरण के वेकेशन सहित छुट्टी रद्द करने का अधिकार सुरक्षित है।

23. अनुचित साधनों एवं उच्छृंखल आचरण पर नियंत्रण- (1) कोई भी छात्र परीक्षा और तत्संबंधी कार्यों के संबंध में अनुचित साधनों का उपयोग या अव्यवस्थित आचरण नहीं करेगा, और ऐसा करने पर उसे संस्थान के परीक्षा के प्रावधानों के अनुसार अपराध की प्रकृति और गंभीरता के आधार पर दंडनीय अपराध माना जाएगा।

(2) रिपोर्ट प्राप्त होने पर या किसी भी छात्र के कदाचार के संबंध में किसी परीक्षा या परीक्षण के मामले का पता चलने पर, निदेशक द्वारा नियुक्त परीक्षा अनुशासनात्मक कार्रवाई समिति को उसमें निर्धारित प्रक्रियाओं का पालन करने के बाद छात्र को दंडित करने की शक्ति होगी और यदि अभ्यर्थी के विरुद्ध परीक्षा में कदाचार का आरोप सिद्ध हो जाता है तो समिति द्वारा उस विद्यार्थी को निम्नलिखित में से कोई एक या अधिक दंड दिया जा सकता है, अर्थात्:-

(क) किसी परीक्षा में उसके प्रवेश को रद्द करना या अस्वीकार करना और उसके द्वारा भुगतान की गई कोई फीस जब्त करना;

(ख) उस परीक्षा का परिणाम रद्द करना जिसके साथ आरोप जुड़ा हुआ है;

(ग) उसे संस्थान के किसी भी पाठ्यक्रम में शामिल होने से एक विशिष्ट अवधि के लिए जो पांच वर्ष या उससे अधिक की हो सकती है या स्थायी रूप से रोक देना।

(घ) नीचे दी गई अनुसूची में दिए गए दंड के स्तर के अनुसार किसी भी संस्थागत परीक्षा में उपस्थित होना:-

(3) नीचे दी गई अनुसूची उक्त अनुसूची के कॉलम (2) में उल्लिखित छात्र के अनुचित, साधनों या कृत्यों के लिए कॉलम (3) में दंड का प्रावधान करती है।

अनुसूची

क्र.सं.	अनुचित साधन अथवा कृत्य	दंड
(1)	(2)	(3)
(1)	परीक्षा हॉल में उत्तर पुस्तिका के अतिरिक्त किसी भी सामग्री पर प्रश्न या उत्तर अथवा कुछ भी लिखना।	संबंधित विषय का परिणाम रद्द किया जा सकता है
(2)	परीक्षा हॉल में परीक्षा के विषय से संबंधित सामग्री लाना अर्थात्:-	दो परीक्षाओं में बैठने से वंचित किया जा सकता है

	<p>(क) पेपर, पुस्तक या नोट्स; या</p> <p>(ख) छात्र द्वारा पहने गए कपड़ों के किसी भी हिस्से पर या उसके शरीर के किसी भी हिस्से, या टेबल अथवा डेस्क पर लिखित नोट्स; या</p> <p>(ग) फुट-रूल या सेट-स्क्वायर, प्रोट्रैक्टर, स्लाइड रूलर आदि जैसे उपकरण जिन पर नोट्स लिखे हों।</p>	
(3)	<p>उत्तर-पुस्तिका से नकल करना पाया गया या सिद्ध हो जाता है अथवा अन्यथा यह स्थापित हो जाता है कि छात्र ने,</p> <p>(क) परीक्षा के दौरान या उसके बाद किसी भी समय किसी भी तरीके से किसी भी कागजात, किताबें, नोट्स, उत्तर-पुस्तिका या किसी अन्य स्रोत से नकल की या मदद ली; या</p> <p>(ख) किसी अन्य छात्र को अपनी उत्तर-पुस्तिका से नकल करने की अनुमति दी; या</p> <p>(ग) किसी अन्य छात्र से सहायता प्राप्त की है या सहायता की है; या</p> <p>(घ) किसी अन्य छात्र के साथ अपनी उत्तर-पुस्तिका या उसके किसी भाग का आदान-प्रदान किया</p>	दो परीक्षाओं में बैठने से वंचित किया जा सकता है
(4)	प्रश्न पत्र (या उसके किसी भाग) में बाहर से उत्तीर्ण होने या उत्तीर्ण होने का प्रयास करने पर	दो परीक्षाओं में बैठने से वंचित किया जा सकता है
(5)	आपत्तिजनक सामग्री को निगलना, उसे लेकर भाग जाना या उसे गायब कर देना या किसी अन्य तरीके से नष्ट करना।	तीन परीक्षाओं में बैठने से वंचित किया जा सकता है
(6)	किसी उत्तर-पुस्तिका को अंदर या बाहर ले जाना या उसे बदलना अथवा उत्तर लिखने के बाद बदल देना (परीक्षा के दौरान या बाद में किसी व्यक्ति की सहायता या सहायता के बगैर या किसी व्यक्ति के मिलीभगत से)।	तीन परीक्षाओं में बैठने से वंचित किया जा सकता है
(7)	उत्तर-पुस्तिका पर्यवेक्षक को न सौंपना या उत्तर-पुस्तिका को नष्ट कर देना।	दो परीक्षाओं में बैठने से वंचित किया जा सकता है
(8)	परीक्षा हॉल में गंभीर कदाचार या कर्मचारियों के साथ दुर्व्यवहार अथवा परीक्षा हॉल के अंदर या बाहर परीक्षा झूटी पर नियुक्त कर्मचारियों के साथ बल प्रयोग।	दो परीक्षाओं में बैठने से वंचित किया जा सकता है
(9)	अवज्ञा, बैठक परिवर्तन, परीक्षा खण्ड में या उसके आसपास दुर्व्यवहार या उत्तर पुस्तिका पर किसी अन्य छात्र की सीट संख्या लिखना।	एक परीक्षा में बैठने से वंचित किया जा सकता है
(10)	अंक बढ़ाने या खाली पन्नों पर उत्तर लिखने के लिए परीक्षक के पास जाना।	तीन परीक्षाओं में बैठने से वंचित किया जा सकता है
(11)	प्रतिरूपण-प्रतिरूपणकर्ता (जो किसी अन्य छात्र के लिए लिखता है), यदि वह इस संस्थान का छात्र होने के साथ-साथ प्रतिरूपित छात्र भी है।	छात्र को संस्थान से स्थायी रूप से वंचित करना।
(12)	<p>जब उत्तर-पुस्तिका में शामिल हो,</p> <p>(क) अपमानजनक या अश्लील अथवा धमकी भरी भाषा; या</p> <p>(ख) परीक्षक से अपील; या</p> <p>(ग) पहचान प्रकट करने के लिए विशिष्ट चिह्न या चिह्न।</p>	संबंधित विषय का परिणाम रद्द किया जा सकता है
(13)	आवेदन पत्र में किसी भी प्रकार की गलत जानकारी के आधार पर परीक्षा में प्रवेश।	एक परीक्षा में बैठने से वंचित किया जा सकता है

(14)	यदि छात्र वीडियो फुटेज में बात करते या कोई अन्य कदाचार करते हुए या परीक्षा हॉल में मोबाइल फोन या कोई अन्य इलेक्ट्रॉनिक गैजेट रखते हुए पाया जाता है।	एक परीक्षा में बैठने से वंचित किया जा सकता है
------	---	---

(4) किसी भी परीक्षा में किसी भी अनुचित साधन या कृत्य को अभ्यर्थी के विरुद्ध सिद्ध किया जाता है, जो उप-विनियम (2) में खंड (घ) में उल्लिखित नहीं है, निदेशक द्वारा नियुक्त परीक्षा अनुशासनात्मक कार्रवाई समिति के पास छात्र द्वारा प्रयुक्त अनुचित साधनों या कृत्यों के मामले के अनुसार सजा निर्धारित करने की शक्ति होगी।

24. उपाधि प्रदान करना- जिन स्कॉलरों ने डिग्री कार्यक्रम पूर्ण कर लिया है और अंतिम वर्ष की परीक्षा में सफल घोषित किए गए हैं उन्हें संस्थान के आगामी दीक्षांत समारोह में व्यक्तिगत रूप से या उनकी अनुपस्थिति में उसके विकल्प को आवश्यक शुल्क के भुगतान पर आयुर्वेद वाचस्पति [डॉक्टर ऑफ मेडिसिन-आयुर्वेद] या आयुर्वेद धन्वन्तरि [मास्टर ऑफ सर्जरी- आयुर्वेद] विशेषज्ञता की डिग्री प्रदान की जाएगी।

25. शुल्क - संस्थान के शासी निकाय द्वारा समय-समय पर निर्धारित किया गया शुल्क स्कॉलरों से लिया जाएगा जो उन पर लागू है और संस्थान के डिग्रीधारकों को नामांकन शुल्क का भुगतान करने से छूट दी जाएगी।

26. विविध- स्नातकोत्तर आयुर्वेद डिग्री कार्यक्रम करने वाले स्कॉलरों को किसी भी वैतनिक या अवैतनिक नियुक्ति या सेवा अथवा काम करने या स्व-रोजगार करने की अनुमति नहीं दी जाएगी और स्कॉलर को किसी भी नई नौकरी या नियुक्ति के लिए आवेदन जमा करते समय संस्थान से 'अनापत्ति प्रमाण पत्र' प्राप्त करने के लिए निर्देशित किया जाएगा और डिफॉल्टर अनुशासनात्मक कार्रवाई जैसे कि स्टाइपेंड की वसूली और प्रवेश समाप्ति के लिए पात्र होंगे।

27. प्राधिकरण की विवेकाधीन शक्तियां - संस्थान के निदेशक के पास इन नियमों के प्रावधानों की व्याख्या में किसी भी विसंगति के लिए, और कारणों को लिखित रूप में दर्ज करने हेतु, संस्थान के शासी निकाय के अनुमोदन या अनुसमर्थन के साथ इन नियमों के किसी भी प्रावधान में छूट दे देने संबंधी, अंतिम अधिकार है।

डॉ. अनूप ठाकर, निदेशक

[विज्ञापन-III/4/असा./810/2023-24]

संलग्नक

आयुर्वेद वाचस्पति - एम.डी. या एम.एस. आयुर्वेद (विशेषज्ञता) के छात्र द्वारा

निष्पादित किए जाने वाला बंधपत्र

[विनियम 12 देखें]

..... द्वारा प्राप्त की जाने वाली मासिक अध्येतावृत्ति के लिए आयुर्वेद शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान के स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम की अध्येतावृत्ति।

यह बंध-पत्र जामनगर में के दिन यहां आयुर्वेद शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान के प्रथम स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम एम.डी./एम.एस.आयुर्वेद वाचस्पति.....के छात्र.....जिसे इसमें आगे प्रथम पक्ष का छात्र कहा गया है और श्री.....के पुत्र/पुत्री....., निवासी.....(प्रथम प्रतिभू) जिसे इसमें आगे सामूहिक रूप से द्वितीय पक्ष के प्रतिभूओं कहा गया है, द्वारा आयुर्वेद शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान, जामनगर के पक्ष में किया गया है।

जबकि इस संस्थान में आयुर्वेद में 3 वर्षीय स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में प्रवेश होने पर छात्र को अपने प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के पहले वर्ष में 42560 रुपये + डीए की वृत्तिका, दूसरे वर्ष में 45600 रुपये + डीए और तीसरे वर्ष में 48640 रुपये + डीए की वृत्तिका मिलेगी, और जबकि आयुर्वेद शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान इसे शर्तों, यहां इसके बाद छात्र द्वारा उचित निष्पादन हेतु प्रतिभूति, पर प्रदान करने के लिए सहमत हो गया है।

अब यह बंधपत्र निम्नलिखित का साक्षी है:-

1. उक्त करार के अनुसरण में और आयुर्वेद शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान द्वारा छात्रों को उपरोक्त प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के दौरान स्नातकोत्तर छात्र को पहले वर्ष में 42560 रुपये + डीए की वृत्तिका, दूसरे वर्ष में 45600 रुपये + डीए

और तीसरे वर्ष में 48640 रुपये + डीए की वृत्तिका देने पर विचार करते हुए, छात्र एतद्वारा आयुर्वेद शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान के साथ वचनबद्ध है कि वह आयुर्वेद में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में अपने अध्ययन जारी रखेगा और नियमों के तहत यथा अपेक्षित सभी परीक्षाओं में उपस्थित होने के बाद पाठ्यक्रम पूरा करेगा।

2. उक्त पाठ्यक्रम के शुरू होने और इसकी 3 वर्ष की अवधि (सफलतापूर्वक) पूर्ण होने के बाद, मैं एतद्वारा सहमत हूँ और इसका पालन करता हूँ/करती हूँ कि मैं संस्थान या किन्हीं अन्य संस्थानों या आयुर्वेद शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान द्वारा आदेशित और निर्देशित किसी अन्य संस्थान की 3 वर्ष की अवधि के लिए सेवा करूंगा/करूंगी और यदि मैं संस्थान की सेवा करने में चूक करने पर इस शर्त का उल्लंघन करता हूँ/करती हूँ तो मैं एतद्वारा सहमत हूँ और वचन देता हूँ/देती हूँ कि मेरी ओर से चूक होने पर, कार्यकाल के लिए मेरे द्वारा आहरित की गई उक्त स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम की कुल परिलब्धियों को मैं वापस करने के लिए उत्तरदायी होऊंगा/होऊंगी और मैं संस्थान द्वारा मेरे लिए किए गए सभी खर्चों का भुगतान करने के लिए भी उत्तरदायी होऊंगा/होऊंगी।
3. उक्त करार के अनुसरण में, उक्त छात्र संस्था में रहते हुए, किसी कार्य, चूक, लापरवाही, या निर्णय में त्रुटि के कारण संस्था को नुकसान या क्षति पहुंचाए बिना, अपने सभी कर्तव्यों का विधिवत और ईमानदारी से निष्पादन, प्रदर्शन और निर्वहन करेगा।
4. उक्त करार के अनुसरण में और पूर्वोक्त को ध्यान में रखते हुए, छात्र और प्रतिभू एतद्वारा सहमत हैं कि यदि छात्र इस संबंध में वचन के अनुसार पाठ्यक्रम पूरा करने में विफल रहता है या उपरोक्त खंड (1) में निहित या किसी भी कारण से अपने शोध कार्य को बंद कर देता है, तो छात्र और प्रतिभू संयुक्त रूप से और अलग से, आयुर्वेद शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान द्वारा भुगतान की गई और उक्त छात्र द्वारा प्राप्त की गई अध्येतावृत्ति की कुल राशि आयुर्वेद शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान को भुगतान करने के लिए उत्तरदायी होंगे।

छात्र और प्रतिभू इस बात से सहमत हैं कि यदि छात्र प्रवेश के 2 (दो) महीने के भीतर बिना किसी पर्याप्त कारण से या प्रवेश के 2 महीने बाद किसी भी कारण से संस्थान छोड़ देता है, तो उसे आयुर्वेद शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान को अपने मूल प्रमाण-पत्र/अंक पत्र वापस पाने के लिए अग्रिम रूप से दो लाख रुपए रुपये का भुगतान करना होगा।

इसके साक्ष्यस्वरूप इस बंधपत्र पर छात्र और प्रतिभूओं द्वारा उपर्युक्त दिन, माह और वर्ष को हस्ताक्षर-

छात्र द्वारा हस्ताक्षरित: _____

पता:

1. गवाह:

2. गवाह:

प्रथम प्रतिभू द्वारा हस्ताक्षरित:

तिथि:

पता:

1. गवाह:

2. गवाह:

द्वितीय प्रतिभू द्वारा हस्ताक्षरित:

तिथि:

पता:

1. गवाह:

2. गवाह:

मेरे समक्ष

INSTITUTE OF TEACHING AND RESEARCH IN AYURVEDA

NOTIFICATION

New Delhi, the 27 February, 2024

F. No. L-12015/25/2021-AS(II).—In exercise of the powers conferred by clause (k), sub-section (1) of section 28 and clause (f) of section 13 of the Institute of Teaching and Research in Ayurveda Act, 2020 (16 of 2020), the Institute of Teaching and Research in Ayurveda, with the previous approval of the Central Government, hereby makes the following regulations, namely:-

1. **Short title and commencement.**- (1) These regulations may be called the Institute of Teaching and Research in Ayurveda, Post Graduate- Ayurveda Regulations, 2024.
 (2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.
2. **Definitions.**- (1) In these regulations, unless the context otherwise requires,-
 - (a) "Act" means the Institute of Teaching and Research in Ayurveda Act, 2020 (16 of 2020);
 - (b) "applicant" means an individual who applies for admission to the Post Graduate in Ayurveda degree programmes of the Institute in a prescribed application form;
 - (c) "Co-Guide" or "Co-Supervisor" means an additional Guide or Supervisor, wherever needed, as approved by the Departmental Research Committee to supervise or guide the research work of the scholar and the Co-guide or Co- Supervisor may or may not be a fulltime faculty of the Institute.
 - (d) "Controller of Examinations" means the Controller of Examinations appointed by the competent authority of the Institute;
 - (e) "Examination Disciplinary Action Committee" means a committee comprising Dean (Academic), Dean (Post-Graduate), two nominated members and Controller of Examination for the purpose of disciplinary action.
 - (f) "Guide" or "Supervisor" means a full time faculty of the Institute who has been approved by the Academic Council to guide or supervise the research work of the research scholar;
 - (g) "Institutional Animal Ethics Committee" means committee for control and supervision of experiments on animals for a period of five years, comprising Biological Scientist, Scientist in-charge of Animal House facility, Two scientists from different biological discipline, A Veterinarian, Main Nominee, Link Nominee, Scientist from outside institute and social aware nominee;
 - (h) "Institutional Ethics Committee" means as per constitution given by Indian Council of Medical Research for a period of three years, comprising Chairperson (from outside Institute), Member Secretary (Ayurvedic Physician), Philosopher or Ethicist, Medical expert, Basic Medical Scientist (Pharmacologist), Clinician from outside of the Institute, Medical expert-Ayurvedic Science, Lay persons from the community-Female and Male, Social Scientist and Legal Advisor;
 - (i) "Principal Investigator" means a person nominated by the Institute for research project to communicate with Institutional Research Committee in relation to project related matters and generation of intellectual property during execution of project.
 - (j) "Scholar" means a person who has been admitted for the Post Graduate degree programme and in compliance with these regulations;
 - (k) "Teacher" means a person appointed as Lecturer or Assistant Professor, Reader or Associate Professor, Professor and a person appointed in concerned basic science department as Pharmacologist, Pharmaceutical Chemist, Pharmacognosist, Biochemist, Microbiologist, Pathologist and Radiologist and other equivalent post in bio-allied field in the Institute on regular basis, and
 - (l) "Tenure of the degree programme" means the minimum period for which a scholar shall attend the Institute and department, including the time spent as resident or non-resident scholar till declared successfully passed in final (third) year examination by the Institute.
- (2) The words and expressions used herein and not defined but defined in the Act shall have the same meaning as assigned to them in the Act.
3. **Admission Committee.**- (1) There shall be an Admission Committee consisting of the following members, namely:-

Admission Committee of the Institute.		
1.	Director	Chairperson;
2.	Deputy Director (Post Graduate)	Member;
3.	Dean (Academic)	Member;
4.	Three Heads of Departments of Ayurveda to be nominated by the Chairperson preferably on a rotation basis	Member; and
5.	Assistant Registrar (Administrative)	Member-Secretary.

- (2) The Committee shall supervise the admission process at Institute of Teaching and Research in Ayurveda in accordance with these regulations.
- (3) Admission Committee shall be constituted by the Director of the Institute every year.
- (4) Minimum fifty per cent. members are required to fulfill the quorum of the meeting.

4. Institutional Research Committee.- (1) There shall be an Institutional Research Committee consisting of the following members, namely:-

Institutional Research Committee of the Institute.		
1.	Director	Chairperson;
2.	Deputy Director (Post Graduate)	Member;
3.	Deputy Director (Pharmacy)	Member;
4.	Dean (Academic)	Member – Secretary;
5.	Member-Secretary, Institutional Ethics Committee	Member;
6.	Member-Secretary, Institutional Animal Ethics Committee	Member;
7.	Biostatistician	Member;
8.	Head Biochemistry or Pathology or Microbiology to be nominated by Chairperson preferably on a rotation basis which can be finalised by the Chairperson.	Member;
9.	Head Pharmacology or Pharmaceutical Chemistry or Pharmacognosy to be nominated by Chairperson preferably on a rotation basis which can be finalised by the Chairperson.	Member;
10.	Three head(s) of the teaching departments to be nominated by Chairperson preferably on a rotation basis which can be finalized by the Chairperson.	Members;
11.	Head, Account section of the institute	Member;
12.	Three invited External experts to be nominated by Chairperson.	Members (s); and
13.		
14.		
15.	Dean (Research)	Member- Secretary.
	The Quorum of the meeting shall be minimum fifty per cent.	

- (2) The Institutional Research Committee shall be constituted by the Director on the recommendations of the Dean (Research) for a period of three years.
- (3) While making the recommendations, the Institutional Research Committee shall ensure that the recommendations are made in conformity with these regulations and it shall have the following powers and functions, namely:-
- to review and monitor the research activities of the Institute;
 - to review and approve the research proposals and other research project related matters;
 - to examine the recommendations of the Departmental Research Committee and make appropriate decisions;
 - to scrutinize the applications of the sponsoring agencies for determining the nature, purpose, quality

- and feasibility of the proposed sponsored research work or project and to approve and make necessary recommendations, if any;
- (e) to appoint the Principal Investigator for the proposed sponsored research work or project;
 - (f) to change the Principal Investigator of research projects under special circumstances by giving preference to the Co- Principal Investigator, if any; and
 - (g) to review and recommend the Memorandum of Understanding with the National and International University or Institute or any reputed organisation or agencies.
- (4) Institutional Research Committee shall meet quarterly or at least twice in a year:
provided that, the Chairperson of the Institutional Research Committee shall call the meeting at any time to address the research related activities.
- (5) After each Institutional Research Committee meeting, Member-Secretary shall prepare the minutes of the meeting and after circulation among members shall be signed by Member-Secretary with the approval of Chairperson and copy of the minutes shall be communicated to the members, Director and Controller of Examination and other concerned.
- (6) Minimum fifty per cent. members are required to fulfill the quorum of the meeting.
- 5. Departmental Research Committee.-** (1) A Departmental Research Committee shall be constituted for each teaching department of the Institute by the Director on the recommendations of the concerned Head of the department for a period of three years and each Departmental Research Committee shall consist of minimum five members.
- (2) Minimum fifty per cent. are required to fulfill the quorum and a regular teacher with Ph.D. degree shall be member of the Departmental Research Committee.
- (3) The Departmental Research Committee shall consist of the following members, namely:-

Departmental Research Committee of the Institute.		
1.	Head of the Department	Chairperson;
2.	All Professors in the Department	Members;
3.	One Associate Professor from the teaching staff of the Department by rotation	Member;
4.	One Assistant Professor from the teaching staff of the Department by rotation	Member-Secretary;
5.	One teacher from the other department to be nominated by Chairperson of Departmental Research Committee.	Member; and
6.	One Head of the research laboratory nominated by Chairperson	Member.

- (4) The Dean (Research) is empowered to attend any Departmental Research Committee meeting and shall be considered as member of the particular meeting.
- (5) The Chairperson shall be in the rank of Professor and in case Head of the department is not in the rank of Professor, the Director may appoint an Associate Professor of same department or suitable person as Chairperson.
- (6) The Chairperson of Departmental Research Committee shall have power to co-opt such member of the staff of the Institute as may be helpful to them in their deliberation as temporary member.
- (7) The Departmental Research Committee shall meet whenever require or at least quarterly.
- (8) The Departmental Research Committee shall have the following powers and functions, namely:-
- (a) to approve the field of research in which the scholars shall be recommended to carry on research;
 - (b) to recommend the change the Guide or Supervisor with justification, if necessary;
 - (c) to evaluate the progress reports of the research works and to discuss all other issues related to research work.

- (9) After each Departmental Research Committee meeting, the Member-Secretary of the Departmental Research Committee shall prepare the minutes of the meeting and after circulation among members, shall be signed by the Member-Secretary with the approval of the Chairperson of the Committee.
- (10) A copy of the minutes shall be communicated to the Dean (Academic) and Dean (Research).
- (11) In case of any dispute in Departmental Research Committee, the matter shall be referred to the Institutional Research Committee, whose decision shall be final and binding.
- 6. Specialties available for Post Graduate in Ayurveda Degree programme.-** (1) The Institute shall grant the Post Graduate Ayurveda Degree in various Ayurveda Specialties.
- (2) The name of speciality and the Department in which Post-Graduate Degree to be conducted are mentioned in the following table :-

Table

Sr. No.	Name of Specialty.	Department in which Post Graduate degree to be conducted.
1.	Ayurveda Samhita evam Siddhanta	Basic Principles of Ayurveda;
2.	Dravyaguna Vigyana	Dravyaguna;
3.	Rasa Shastra evam Bhaishajya Kalpana	Rasa shastra evam Bhaishajya Kalpana;
4.	Kayachikitsa	Kayachikitsa;
5.	Panchakarma	Panchakarma;
6.	Roga Nidana evam Vikriti Vigyana	Roga Nidana evam Vikriti Vigyana;
7.	Swasthavritta	Swasthavritta and Yoga;
8.	Kriya Sharira	Kriya Sharira;
9.	Kaumarbhritya– Balaroga	Kaumarbhritya;
10.	Prasuti Tantra evam Stri Roga	Prasuti Tantra evam Stri Roga;
11.	Shalya	Shalya Tantra;
12.	Shalakya	Shalakya Tantra;
13.	Rachana Sharira	Rachana Sharira; and
14.	Agada Tantra	Agada Tantra.

- (3) The nomenclature of speciality or degree with most equivalent term shall be as mentioned in table below, namely:-

S. No.	Nomenclature of specialty or degree.	Near most Equivalent Term.
1.	Ayurveda Vachaspati– Ayurveda Samhita evam Siddhant	M.D. (Ayurveda)- Basic Principles;
2.	Ayurveda Vachaspati– Dravyaguna Vigyana	M.D. (Ayurveda)- Materia Medica and Pharmacology;
3.	Ayurveda Vachaspati– Rasa Shastra evam Bhaishajya Kalpana	M.D. (Ayurveda) – Pharmaceuticals;
4.	Ayurveda Vachaspati– Kayachikitsa	M.D. (Ayurveda)- Medicine;

5.	Ayurveda Vachaspati— Panchakarma	M.D. (Ayurveda)- Panchakarma;
6.	Ayurveda Vachaspati— Roga Nidana evam Vikriti Vigyana	M.D. (Ayurveda)- Diagnostic procedure and Pathology;
7.	Ayurveda Vachaspati— Swasthavritta	M.D. (Ayurveda)- Social and Preventive Medicine;
8.	Ayurveda Vachaspati— Kriya Sharira	M.D. (Ayurveda) – Physiology;
9.	Ayurveda Vachaspati— Kaumarabhritya— Bala Roga	M.D. (Ayurveda)- Paediatrics;
10.	Ayurveda Dhanvantari— Prasuti Tantra evam Stri Roga	M.S. (Ayurveda)- Obstetrics and Gynecology;
11.	Ayurveda Dhanvantari— Shalya	M.S. (Ayurveda)- Surgery;
12.	Ayurveda Dhanvantari— Shalakya	M.S. (Ayurveda)- Diseases of Eye, Ear, Nose, Throat Head, Neck, Oral and Dentistry;
13.	Ayurveda Vachaspati— Rachana Sharira	M.D. (Ayurveda) – Anatomy; and
14.	Ayurveda Vachaspati— Agada Tantra	M.D. (Ayurveda)- Toxicology and Forensic Medicine.

7. Eligibility for admission in Post Graduate degree programme.-

- (1) The applicant shall clear All India AYUSH Post Graduate Entrance Test conducted by an authority designated by the Central Government for the academic year of admission and the merit of previous entrance test shall not be considered for admission in Post Graduate degree programme.
- (2) The applicant shall possess Bachelor of Ayurveda Medicine and Surgery degree from any Statutory University or Statutory body recognised by the Central Council of Indian Medicine or National Commission for Indian System of Medicine or any equivalent degree conferred by the Statutory bodies and must have completed the required period of pre-registration internship of one year and enrolled in Central register or State register of Indian System of Medicine.

8. Date of Admission.- The admission in Post Graduate degree programme shall be once in a year.

9. Mode of Admission.- (1) The applicants seeking admission for Post Graduate degree programme at the Institute shall have to qualify through All India AYUSH Post Graduate Entrance Test conducted by an authority designated by the Central Government according to the qualifying criteria laid down.

(2) The candidate shall apply in a prescribed application form, within the date fixed by the examination authority designated to conduct the All India AYUSH Post Graduate Entrance Test along with the application fees declared time to time through online mode.

(3) The details of the All India AYUSH Post Graduate Entrance Test shall be available on the website of the Institute and on the website of the authority designated to conduct the All India AYUSH Post Graduate Entrance Test.

(4) Centers for online entrance test shall be decided by the examination authority and shall be available on the website of the Institute and on the website of the authority designated to conduct the All India AYUSH Post Graduate Entrance Test.

(5) The result and all India merit list shall be published on the website of the Institute and on the website of the authority designated to conduct the All India AYUSH Post Graduate Entrance Test.

(6) The counselling shall be done as decided by the authority designated by the Central Government.

(7) The sponsored or nominated candidate shall also be required to qualify in Entrance Test along with the eligibility specified in regulation 7 except foreign nationals or nominated teachers or Medical officers.

- (8) Foreign National candidates seeking admission shall submit their applications to Institute of Teaching and Research in Ayurveda or through Indian Council for Cultural Relations (for availing AYUSH Scholarship for foreign nationals), Government of India, New Delhi and they are exempted from All India AYUSH Post Graduate Entrance Test.
- (9) All the selected candidates shall be subjected to medical fitness and shall not be permitted to join the degree programme unless declared medically fit.
- 10. Reservation.-** (1) The reservation for different categories the Scheduled Caste, the Scheduled Tribe, the Other Backward Class, the Economically Weaker Section, and the person with benchmark disabilities shall be as per the guidelines from the Department of Personnel and Training, Government of India at the time of admission.
 - (2) Three seats shall be reserved for the candidates nominated by the Central Government and the candidates sponsored by the State Government or Union territory Administration which do not have Government institutes or colleges having Post Graduate degree programmes, in the specialties or subject concerned shall be considered for nominations as per guideline provided by Ministry of Ayush from time to time.
 - (3) Three non-stipendiary seats shall be reserved for foreign national candidates and these candidates shall be nominated by the Ministry of Ayush from the application received from Indian Council for Cultural Relations.
 - (4) If any vacancy arises out of reserved quota seats, it shall be filled strictly by following the applicable Central Government norms.
- 11. Stipend.-** (1) The scholars who are admitted on stipendiary seats shall be paid monthly stipend as determined by the Institute from time to time for a period not exceeding three years subject to his or her satisfactory attendance, main training, research progress, conduct and hospital work and in case of failure in preliminary examination, stipend shall be stopped till passing the examination and promotion to next year.
 - (2) No sponsored candidates under the employment of the Central Government or State Government shall be paid any emoluments by the institute during study period and payment of any remuneration in this regard shall be the responsibility of the concerned Government.
 - (3) The scholars giving up studies in the middle of the session shall be required to refund the whole amount of stipend paid to the scholar since joining the Post Graduate degree programme along with bond amount of rupees two lakh.
 - (4) The Director of the Institute shall be the competent authority to decide such cases as mentioned in sub-section (3) of regulation 11.
 - (5) In the event of the death of a scholar during the study period, no recovery of the stipend paid shall be made.
- 12. Bond.-** (1) Every selected candidate shall have to execute a bond with the Institute before joining the Post Graduate degree programme in the prescribed form as per Annexure.
 - (2) If the scholar leaves the programme in between, the scholar shall have to pay rupees two lakh to the Institute as compensation in advance to get relieved from the Institute along with the stipend paid in advance.
- 13. Tenure of Degree programme and Attendance.-** (1) The selected candidates shall have to undergo a period of study for three years after admission, out of which one year shall be devoted to preliminary course and next two years devoted to specialty course.
 - (2) If student due to any reason leaves the degree programme in between with the due permission of authority of the Institute, he or she shall be allowed to complete the degree programme within maximum duration of six years from the date of admission.
 - (3) The scholars shall be required to attend at least seventy five per cent. of total lectures, practical and clinics to become eligible to appear in the examination.
 - (4) The scholars shall be required to attend the hospital and other duties as allotted to them during the period of study.
 - (5) All the scholars shall be required to do junior or senior resident duties in their respective departments during preliminary and final courses respectively.
 - (6) In first year the scholars shall have to work as junior residents and shall have to attend indoor hospital, designated laboratories, Pharmacy duties at least three to five hours in a day where they shall have to complete all the related records.
 - (7) The second and the third year scholars shall have to work as senior residents and shall have to complete all the clinical records pertaining to the patients and shall have to assist the concerned teacher in conducting related work and Out Patient Department duties as well have to attend hospital emergencies and night duties.

- (8) All the scholars shall have to attend hospital duties on Sundays and holidays also and they are required to take prior permission and approval of the Dean (Academics), on the recommendation of Head of department for going out of station during holidays.
 - (9) On continued absence of the scholar for more than thirty days without prior permission of the Dean (Academic) or Director, the admission shall be terminated automatically without any notice.
 - (10) The scholars shall be required to attend special lectures, demonstrations, workshop, seminars, training, study tours and such other activities which may be arranged by the Institute from time to time.
 - (11) Scholars shall not be permitted to join any other full time degree programme simultaneously during study period, but may be permitted to join diploma or certificate course, without disturbing the assigned duties and studies, only after permission from Dean (Academic) through proper channel.
 - (12) If the scholar gets selected for a permanent appointment in any Government body during the tenure of degree programme, the scholar may join the services and may complete the degree programme after getting due permission from the employer within a period of six year from date of joining in the Institute.
 - (13) If the scholar fails to complete the study within a period of six years from the joining date in the Institute, after a year joining to service, the admission shall be deemed cancelled and he or she shall be liable to pay whole amount of stipend along with bond amount of rupees two lakh sub-regulation (3) of regulation 11.
 - (14) In case of rejoining the study, the scholar shall fulfill the criteria of seventy-five per cent. attendance in each year and dissertation completion before appearing for the final examination.
- 14. Method of Training.-** (1) Intensive training shall be given in classical knowledge along with comparative and critical study in their respective specialty and emphasis shall be given on in-service training and practical.
- (2) The scholars are required to know about the methods and techniques of research work done in their respective specialty.
 - (3) The training requires in such a pattern so as to be given graded responsibility in the management and treatment of patients entrusted to his care and to deal with emergencies.
 - (4) The scholars shall be required to participate in the teaching and training programmes of Undergraduate scholars or internees, in their specialty.
 - (5) In the first year period, the emphasis shall be given to provide adequate knowledge in the applied aspects of the fundamentals of all the subjects of Ayurveda and adequate training in the basic science of medicine in all its applied and comparative aspects relevant to the specialty concerned.
 - (6) The clinical training shall aim to extend the knowledge of the scholar to undertake independent work as a specialist.
 - (7) Thorough and intensive training on a planned programme shall be given to the scholars during all stages of the degree programme and such programme shall be available for the inspection and scrutiny of the Dean (Academic) or Deputy Director (Post Graduate), if required.
 - (8) Adequate training in teaching technology and research methods shall be provided during the degree programme.
 - (9) Each department has to plan a study tour as a part of teaching and training and a study tour shall strictly be at the places related to the subject or specialty which aim to add the sum of extra information and knowledge of the field and the study tour may include the visit of following places in India, namely:-
 - (a) ayurvedic industry;
 - (b) any forest or place for observation of herbs or medicinal plants;
 - (c) famous Ayurvedic hospitals of various specialties, panchakarma centers or place of traditional healing;
 - (d) research centers and laboratories;
 - (e) manuscript libraries, archeological sites related to Ayurveda; and
 - (f) leading National academic Institutes.
 - (10) The medium of instructions shall be in Hindi, English or Sanskrit.

15 Examinations.- (1) The Post Graduate degree programme shall have two main examinations, such as preliminary examination and final examination.

- (2) The preliminary examination shall be held at the end of the first academic year in the subjects prescribed for the first year course of study.
- (3) The final examination shall be held at the end of the third academic year in the subject of specialisation mentioned in sub-regulation (2) of regulation 17.
- (4) There shall be no examination in second year but scholar has to complete minimum one short term certificate course offered by the Institute and minimum one online course offered by any other Government recognised organisation like World Health Organisation, National Programme on Technology Enhanced Learning, Study Webs of Active-Learning for Young Aspirant Minds, Open Course Ware-Massachusetts Institute of Technology, Online courses from various Indian Institute of Technology.
- (5) The course may preferably be chosen from subjects like informatics, data management and interpretation, scientific writing communication skills, personality development, hospital management, drug research and development.
- (6) Sanskrit may also being useful subject for study of Ayurveda and research.
- (7) The scholar shall be promoted to the final year on the basis of satisfactory progress in his research project, regularity and punctuality in concerned department and after passing all the first year subjects.
- (8) The minimum marks required for passing the preliminary and final year examination shall be fifty per cent. in theory and in practical (that include practical, clinical and viva-voce wherever applicable) separately in each subject as specified in marks distribution table of these regulations and no grace marks shall be admissible.
- (9) A student obtaining sixty-five per cent. and above marks shall be awarded first class in the subject and seventy-five per cent. and above marks shall be awarded distinction in the subject and these award shall not be applicable for supplementary examinations.

- 16. Subjects for Preliminary examination.-** (1) There shall be two theory papers, each of three hours duration and of hundred marks, followed by practical or clinical or viva examination having the subjects, mentioned in table below, namely:-

Table

Sl. No.	Name of subjects.	Theory marks.	Viva and practical marks.
1.	Research Methodology and Medical Statistics	100 (60 + 40)	100
2.	Specialty subject	100	100

- (2) The Institute shall decide the teaching pattern and subjects or courses in each semester or year time to time.
- (3) If a scholar fails in one subject only, he or she shall be allowed to keep the terms of the second year and no scholar shall be promoted to final (third) year from second year unless he or she has passed the first year examination in all the subjects.
- (4) The subsequent supplementary preliminary examination shall be held every six months and maximum four trials (including the main examination) shall be given to pass the preliminary examination within a period of maximum of four years and the student shall not be allowed to continue the degree programme further in case of his inability to pass within the maximum limit.

- 17. SCHEME OF FINAL EXAMINATION:-**(1) ALL SCHOLARS WHO INTEND TO APPEAR IN THE FINAL YEAR EXAMINATION SHALL SUBMIT THE DISSERTATION THROUGH DEAN (ACADEMIC) ON OR BEFORE THE DATE SPECIFIED BY THE INSTITUTE AND ITS APPROVAL.

- (2) There shall be four theory papers each of hundred marks and of three hours duration, followed by practical or clinical or oral examination of hundred marks and specialty wise subjects for final year shall be as mentioned in table below, namely:-

Table

PaperNo.	Name of subjects.	Theory marks (four papers).	Practical or Clinical or Oral marks.	Total marks.
1	Ayurved Samhita Evam Siddhanta	400	100	500
2	Dravyaguna Vigyan	400	100	500

3	Rasashastra Evam Bhaishajya Kalpana	400	100	500
4	Kayachikitsa	400	100	500
5	Panchakarma	400	100	500
6	Roganidana evam Vikriti Vigyana	400	100	500
7	Swasthavritta	400	100	500
8	Kaumarbritya- Balaroga	400	100	500
9	Kriyasharira	400	100	500
10	Prasuti Tantra evam Striroga	400	100	500
11	Shalya	400	100	500
12	Shalakya	400	100	500
13	Rachana Sharira	400	100	500
14	Agada Tantra	400	100	500

- (3) The Institute shall decide the teaching pattern and syllabus of each paper of the specialty subjects time to time.
 - (4) Division of marks for theory, practical or clinical or viva voce examinations shall be specified by the concerned department and approved by the academic council and shall be amended from time to time.
 - (5) The subsequent supplementary examination for the failed students of final (third) year shall be held every six months.
 - (6) Total duration of Post Graduate degree programme shall not exceed six years.
- 18. Conduct of examination.-** (1) At the time of theory and practical examinations, the Dean (Academic) shall be the Presiding Officer.
- (2) In the preliminary examination, each theory question paper shall be of total hundred marks, consisting of two parts, namely, Part A and Part B.
 - (3) For preliminary examination, there shall be two evaluations for an answer book by two different examiners so that lopsided nature in single evaluation and consequent unpleasant situation is mitigated.
 - (4) After double evaluation, in case of variation of both the scores up to twenty per cent. of the total marks then the average of both the scores shall be considered as final score.
 - (5) In case of fractional scores, if the fraction is 0.5 or above, it shall be rounded up to next highest digit and if the score is below 0.5 it shall be rounded up to the lower digit value.
 - (6) At the end of double evaluation, if the variation between two independent scores is more than twenty per cent. of the total marks, then such answer books shall be considered for evaluation by third eligible examiner
 - (7) Among two separate examiners, one examiner shall be external and shall also conduct the practical or clinical or viva voce examination for the concerned subject.
 - (8) The final year examination shall be conducted by a team of four examiners, out of which two examiners shall be external and these four examiners shall set four theory question papers of hundred marks each, for each specialty or subject.
 - (9) For final year examination, there shall be four evaluations for an answer book by four examiners and the average of all the scores shall be considered as final score.
 - (10) In case of fractional scores, if the fraction is 0.5 or above, it shall be rounded up to next highest digit and if the score is below 0.5 it shall be rounded up to the lower digit value.
 - (11) The examiners who have set the theory papers shall conduct the practical or clinical or viva voce examination also.
 - (12) A recognised Post Graduate teacher as mentioned in regulation 21 with five years Post Graduate teaching experience as an Assistant Professor or above in concerned subject shall be eligible to be appointed as examiner for the Post Graduate examination.
 - (13) In case of unavailability of external examiner due to any cause at the time of examination, the Dean

(Academic) shall appoint the new examiner to conduct the examination with intimation to the Controller of Examination and the newly appointed examiner preferably shall be external and in case of unavailability of such examiner, internal senior faculty of concerned subject is to be appointed.

- 19. Dissertation.-** (1) As a part of Post Graduate Ayurveda degree programme, each scholar shall prepare a dissertation on the subject related to concerned specialty and syllabus.
- (2) The title of the dissertation along with synopsis shall be registered to Institute within nine months of admission in the first year and the subject of every dissertation may be practical oriented, related devoid of unpromising repetitions and shall be helpful in the development of Science of Ayurveda.
- (3) The synopsis shall clearly mention the full title of the dissertation, need of the work, action plan of work, budget required for the work along with the name of the department and the name and designation of the Guide or Supervisor and Co- guide or Co-supervisor.
- (4) All the synopsis of the departmental scholars shall be discussed in Departmental Research Committee and after approval of the Departmental Research Committee, they shall be forwarded to Institutional Research Committee which would approve the title of the dissertation and proposed scheme of work.
- (5) After the approval, synopsis shall be forwarded to the Institutional Ethics Committee or Institutional Animal Ethics Committee (whatever is applicable), which shall look after the ethical issues and shall give approval for the work to be carried out.
- (6) Once the title for the dissertation is approved, a scholar shall be allowed to change the title or the proposed scheme of work only after approval of Departmental Research Committee and Institutional Ethics Committee which shall ultimately intimate to the Controller of Examination.
- (7) Each clinical research work after approval of the Institutional Ethics Committee shall be registered prospectively to "Clinical Trial Registry of India".
- (8) Every scholar shall present the progress report of the work duly signed and forwarded by the Guide or Supervisor to the Departmental Research Committee at the end of each term and the Departmental Research Committee shall assess and monitor the progress of the work and approve it accordingly.
- (9) The dissertation shall place on record the methods and potentiality of the research carried out by the scholar on the problem selected by him and completed under the guidance of the Guide or Supervisor approved by the Institute.
- (10) The working for the dissertation shall be well utilised for learning to search the literature, its critical study and its practical application and dissertation shall consist of the scholar's own account of research.
- (11) The dissertation shall consist of critical review of literature, methodology, results of the research, discussion on the basis of research findings of the study, summary, conclusion and references.
- (12) The dissertation must be typed on both side of the paper of A4 size with a margin of one inch on either side and the typing shall be done in the font size of 12 with the fonts of Times New Roman with 1.5 line spacing and the title cover shall be in standard format as specified by the Institute and for Devanagari scripts Unicode fonts shall be used.
- (13) Nowhere in the dissertation or work, the photo of an individual be fixed as well as the work shall not be dedicated to anybody and the pattern of the title cover and the inner covers shall be as per the directives given by the Institute.
- (14) The dissertation ordinarily shall not exceed two hundred and fifty typed pages including charts, diagrams, photographs, bibliography and like.
- (15) The dissertation shall contain at the end a summary of not more than one thousand and five hundred words covering the conclusion.
- (16) The scholar shall have to submit the dissertation three months before the final examination and not later than the last date fixed by the Institute.
- (17) The dissertation shall contain the certificate duly signed by scholar, Guide or Supervisor and Co-guide or Co-supervisor stating that the work has been carried out and data has been collected by scholar himself under direct supervision of the Guide certifying that the works cited in present dissertation are duly acknowledged.
- (18) Each dissertation shall undergo for plagiarism check and a certificate for the same shall be issued by the Librarian to each dissertation.
- (19) Number of copies of the bound dissertation and summary along with soft copy with the certificate of Guide

or Supervisor and Co-guide or Co-supervisor shall be submitted within the specified date, duly forwarded by the Head of the department as per the guideline decided by the Institute from time to time.

- (20) The dissertation shall be assessed by three adjudicators appointed by the Institute, out of which two adjudicators shall be external and one internal (Guide of the work) and work shall be approved by a majority of opinion.
- (21) If the dissertation is not approved, it shall be returned to the scholar with the remarks of the adjudicators and the scholar can re-submit the dissertation after making necessary improvement to the Institute.
- (22) The scholars shall be permitted to appear in the final examination of Post Graduate degree programme only after approval of the dissertation by the adjudicators.
- (23) The dissertation, when approved, shall become the property of the Institute and any publication and intellectual property rights relating to research work carried by scholars must mention the name of the Supervisor or Guide as one of the author with affiliation to this Institution and if is not implemented in any case, the Institute may initiate the legal actions.
- (24) Inter-disciplinary research may be done by co-opting the Co-guide or Co- supervisor from the concerned specialty.
- (25) It is desirable that every scholar publish one research paper based on his or her current dissertation work in peer reviewed journal, at least indexed at University Grants Commission –Consortium for Academic Research and Ethics.

20. Guide or Supervisor.- (1) A recognised Post Graduate Teacher as mentioned in regulation 21 of the concerned subject of the status of a Professor or Associate Professor in the concerned specialty or subject shall be eligible for Guide or Supervisor and Assistant Professor with three years of Post Graduate teaching experience in the concerned specialty or subject shall be eligible for Guide or Supervisor.

- (2) Allotment of the scholars to the Guide shall be done on the basis of a roster prepared by the Institute in consultation with the Departmental Research Committee and Dean (Academic).
- (3) The distribution of scholars and seat under each Guide as per the guideline issued by the Institute from time to time and every year maximum four scholars can be registered under Professor, three scholars under Associate Professor and two scholars under the Assistant professor.
- (4) When the numbers of Guides proportionately are less, then considering merit and designation of the faculty member, extra scholars may also be registered.
- (5) In case of retirement of Guide before the completion of the dissertation, the next eligible Co-guide or Co-supervisor or teacher of the concerned subject or department shall take responsibility of the Guide, after getting due permission from the Director.
- (6) If a guide of any Doctor of Medicine or Doctor of Surgery (Ayurveda) scholar is retired or resign from the post due to any reason and the research work under his or her guidance been completed and same has been certified by the Head of department and thereafter the Director is empowered to allow the submission of dissertation under the same guide.
- (7) A teacher shall not be allowed to register the Post Graduate scholars three years prior to his or her retirement.
- (8) In case of unavailability of eligible Guide or Supervisor as per sub-regulation (1) in any specialty, the Director of Institute is empowered to relax the criteria for eligibility as Guide or Supervisor as an interim measure.

21. Recognition as Post Graduate Teacher.- Teachers of the Institute having following qualification and teaching experience shall be recognized as Post Graduate teachers, namely:-

- (a) Post Graduate degree in concerned specialty or subject;
- (b) minimum three years of Post Graduate teaching experience after Post Graduate degree or minimum five years Under Graduate teaching experience after Post Graduate degree; or
- (c) a faculty having minimum ten years Research or Industrial experience with Post Graduate Degree in Ayurveda or any other basic science may be recognised as visiting Post Graduate teacher of the Institute.

22. Vacation and Leave.- (1) There shall be vacation of fifteen days for the scholars at the end of academic year and no any kind of leave shall be attached with vacation:

Provided that the Director shall have power to sanction extra leave in extra ordinary circumstances.

- (2) The scholars shall be allowed casual leave up to ten days each year and such leave may be joined with the holidays or Sundays and the scholars may avail such leave maximum up to ten days at a time including holidays.
 - (3) In between holidays, a holiday shall be considered as holiday.
 - (4) The casual leave cannot be joined with vacation and medical leave, and such leave cannot be carry forwarded to the next academic year.
 - (5) The scholars shall be allowed fifteen days medical leave in a year on submission of medical certificate of a registered medical practitioner and such leave cannot be carry forwarded to the next academic year.
 - (6) Wherever eligible, maternity or child care leave shall be given to the scholars as per the Maternity Benefit Act, 1961 (53 of 1961) after joining, such scholars have to complete the study period as specified at sub-regulation (1) of regulation 13.
 - (7) The leave mentioned in sub-regulation (6) shall be allowed once during the period of study on production of substantial document and no any kind of leave shall be attached with this leave:
 - (8) The Director has power to sanction up to thirty days leave in extra ordinary circumstances and no stipend shall be paid for repetition such kind of leave which is sanctioned in extra ordinary circumstances.
 - (9) No stipend shall be paid for such kind of leave which is sanctioned in extraordinary circumstances.
 - (10) The duty or special leave shall be granted to the scholars who are deputed or allowed by the authority to take part in the sports, seminar, study tour and such leave shall not exceed fifteen days in a year; however, the leave may be extended maximum up to further fifteen days in special case by the Director.
 - (11) Any unreasonable leave or absence availed by stipendiary or non-stipendiary scholars without the previous approval of the Dean (Academic) or in excess of limit mentioned above shall be treated as willful absence and no stipend shall be granted for such period, and may invite disciplinary action which may include termination of the scholarship and recovery of the stipend paid by the Institute.
 - (12) Under the special circumstances, the scholar shall be allowed to avail medical leave up to maximum sixty days without stipend under medical ground with the valid medical certificate issue by registered medical practitioner.
 - (13) The scholars admitted on non-stipendiary seats shall be governed by the sub- regulations (1) to (12) of regulation 22.
 - (14) The authority reserves the right to cancel the leave including vacation without any explanation.
- 23. Control of unfair means and disorderly conduct. -** (1) No student shall use unfair means or indulge in disorderly conduct at, or in connection with the examination and doing so shall be considered as on punishable offence depending upon the nature and gravity of the offence as per the provisions of examination of the Institute.
- (2) On receipt of a report or on detection of a case regarding the misconduct of any student at any examination or tests, the Examination Disciplinary Action Committee appointed by the Director shall have the power to punish the student after following the procedures as laid down therein and any one or more of the following punishment may be awarded by the committee to the student where a charge of misconduct at an examination is held proved against the candidate, namely: -
 - (a) cancelling or rejecting his admission to an examination and forfeiting fees if any, paid by him;
 - (b) cancelling his result of the examination with which the charge is connected;
 - (c) debarring him for a specific period which may be five years or more or permanently from joining any course of the institute.
 - (d) appearing in any of the Institutional examination as per the level of punishment given in Schedule below :-

SCHEDULE

Sr. No.	Unfair Means or Acts.	Punishment.
(1)	(2)	(3)
(1)	Writing questions or answers or anything on any material other than answer book inside the examination hall.	Cancelling the result of respective subject
(2)	Possession of material(s) relevant to the subject of the examination in	Disqualification from

	<p>examination hall namely:-</p> <p>(a) papers, books or notes; or</p> <p>(b) written notes on any part of the clothes worn by the student or on any part of his or her body, or table or desk; or</p> <p>(c) foot-rule or instruments like set-squares, protractors, slide rulers, etc. with notes written on them.</p>	appearing in examinations for two exams
(3)	<p>Copying is found or established from answer-book or it is otherwise established that the student has,</p> <p>(a) copied or taken help from any papers, books, notes, answer-book or any other sources in any manner during the examination or at any time thereafter; or</p> <p>(b) allowed another student to copy from his or her answer-book; or</p> <p>(c) received help from or has helped another student; or</p> <p>(d) exchanged his or her answer-book or part thereof with another student.</p>	Disqualification from appearing in examinations for two exams
(4)	On passing or attempting to pass on the question paper (or part thereof) outside	Disqualification from appearing in examinations for two exams
(5)	Destruction of incriminating material(s) by swallowing, running away with it or causing its disappearance or by any other means.	Disqualification from appearing in examinations for three exams
(6)	Smuggling in or out of an answer-book or replacing or getting it replaced after attempting answers (during or after the examination with or without the help or connivance of any person).	Disqualification from appearing in examinations for three exams
(7)	Non delivery of answer-book to the supervisor or destroying the answer book.	Disqualification from appearing in examinations for two exams
(8)	Serious misconduct in the examination hall or misbehavior with staff or using force with the staff appointed on exam duty inside or outside the examination hall.	Disqualification from appearing in examinations for two exams
(9)	Disobedience, change of seat, misbehavior in or around examination hall or writing another student's seat number on the answer-book.	Disqualification from appearing in examinations for one exam
(10)	Approaching examiner for raising marks or for writing the answer on blank pages.	Disqualification from appearing in examinations for three exams
(11)	Impersonation—impersonator (who writes for another student), if is a student of this institute as well as impersonated student.	Permanently debarring the student from Institute.
(12)	<p>When answer-book contains,</p> <p>(a) abusive or obscene or threatening language; or</p> <p>(b) appeal to the examiner; or</p> <p>(c) distinctive mark or sign to disclose the identity.</p>	Cancelling the result of respective subject
(13)	Admission to the examination on any kind of false representation in the application form.	Disqualification from appearing in examinations for one exam
(14)	If the student is found talking or doing any other malpractice in the video footage or keeping mobile phone or any other electronic gadgets in the examination hall.	Disqualification from appearing in examinations for one exam

- (3) The Schedule below provides punishment in column (3) for unfair means or acts of student mentioned in column (2) of the said Schedule.
- (4) Any unfair means or acts in any examination is held proved against the candidate, which are not mentioned in clause (d) in sub-regulation (2), the Examination Disciplinary Action Committee appointed by the Director shall have the power to decide the punishment as per the case of unfair means or acts by the student.
- 24. Award of the Degree.** - The scholars who have completed the degree programme and have been declared successful in the final year examination shall be awarded the degree of Ayurveda Vachaspati [Doctor of Medicine- Ayurveda] or Ayurveda Dhanvantari [Master of Surgery- Ayurveda] specialty concerned, on payment of necessary fees, either in person or in absentia at his or her option at the succeeding convocation of the Institute.
- 25. Fees.** - The fees as decided by the Governing Body of the Institute from time to time shall be charged from the scholars as may be applicable to them and the degree holders of the Institute shall be exempted from paying the enrolment fees.
- 26. Miscellaneous.** - The scholars undergoing Post Graduate Ayurveda degree programme shall not be permitted to undertake any paid or unpaid appointments or service or work or engage himself or herself in self-employment and the scholar shall be directed to obtain 'No Objection Certificate' from the Institute while, submitting an application for any new job or appointments and the defaulters are liable for disciplinary action such as recovery of stipend and termination of admission.
- 27. Discretionary powers of authority.** - The Director of the Institute has the final authority for any discrepancy in the interpretation of provisions of these regulations, and for reasons to be recorded in writing, may relax any provisions of these regulations with the approval or ratification of the Governing Body of the Institute.

Dr. ANUP THAKAR, Director

[ADVT.-III/4/Exty./810/2023-24]

Annexure

BOND TO BE EXECUTED BY A SCHOLAR OF AYURVEDA

VACHASPATI – M.D. or M.S. AYURVEDA (SPECIALITY)

[See regulation 12]

Post Graduate course of the Institute of Teaching and Research in Ayurveda for monthly stipend to be received by her/him

This Bond made on the..... day ofat (Jamnagar) bystudent of the First M.D./M.S. Ayurveda Vachaspatithe Post Graduate course of the Institute of Teaching and Research in Ayurveda here in a after called the student of first part andson/daughter of Shri (first surety) here in after called collectively referred to as the sureties of the second part on favour of the Institute of Teaching and Research in Ayurveda, Jamnagar.

Whereas the student when admitted to the 3 years Post Graduate course in Ayurveda will be getting a stipend of Rs. 42560 +DA in the first year, Rs. 45600 + DA in the second year and Rs 48640 + DA in the third year course of his or her training in this institution, and whereas the Institute of Teaching and Research in Ayurveda has agreed to award the same on terms here in after security for due performance by the student for the said terms.

Now this bond witnesses as follows:-

1. In pursuance of the said agreement and in consideration of Institute of Teaching and Research in Ayurveda giving to the students a stipend of Rs. 42560/- + DA for the first year and Rs 45600 + DA in the second year and Rs 48640 + DA per in the third year of the Post Graduate student during the course of the training as aforesaid, the student hereby convenience with the Institute of Teaching and Research in Ayurveda that he or she shall carry on with his or her studies in the Post Graduate Training course in Ayurved and complete the course after appearing at all the examinations as required under the rules.
2. After commencement of the said course for a period of three years (successfully) that, I hereby agree and abide by that I will serve the institution or any other institutions or any other institution ordered and directed to me by Institute of Teaching and Research in Ayurveda for a period of three years and if I breach of this condition on committing default in serving the Institution than I hereby agree and undertake that in case of a default on my part

I shall be liable to refund in total emoluments of the said Post Graduate course drawn by me for a period of three years and I shall liable to pay all the expenses incurred for me by the institution.

3. In the pursuance of the said agreement, that if the said scholar while in institution shall duly and faithfully devote to and execute, perform and discharge all the duties without causing and inquiry loss or damage by reason of any act, default, negligence, or error in judgments to the Institution.
4. In pursuance of the said agreement and for consideration aforesaid the student and sureties hereby agree that if the student would fail to complete the course in accordance with the covenant in that behalf contain or in clause (1) above or shall discontinue his or her studies for any reason what so ever the student and sureties shall jointly and separately liable to pay to the Institute of Teaching and Research in Ayurveda, the total amount of fellowship paid by the Institute of Teaching and Research in Ayurveda and received by the scholar as aforesaid.

Student and sureties are hereby further agree that if the student leaves the institute without any sufficient reason within 2 (two) months of the Admission or due to any reason after 2 months of the Admission, then he or she to pay Rs. Two Lakhs only to the Institute. In advance to get back his or her original certificates or mark sheets.

In witness whereof this bond has been signed by the student and sureties on the day, months of year in above mentioned.

Signed by the student:

Address:

1. Witness:
2. Witness:

Singed by the First Surety:

Address:

1. Witness:
2. Witness:

Singed by the Second Surety:

Address:

1. Witness:
2. Witness:

Before me